अक्टूबर , 2021 वर्ष : 42 अंक : 10

www.indiatibet.net

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका

तिब्बत देश

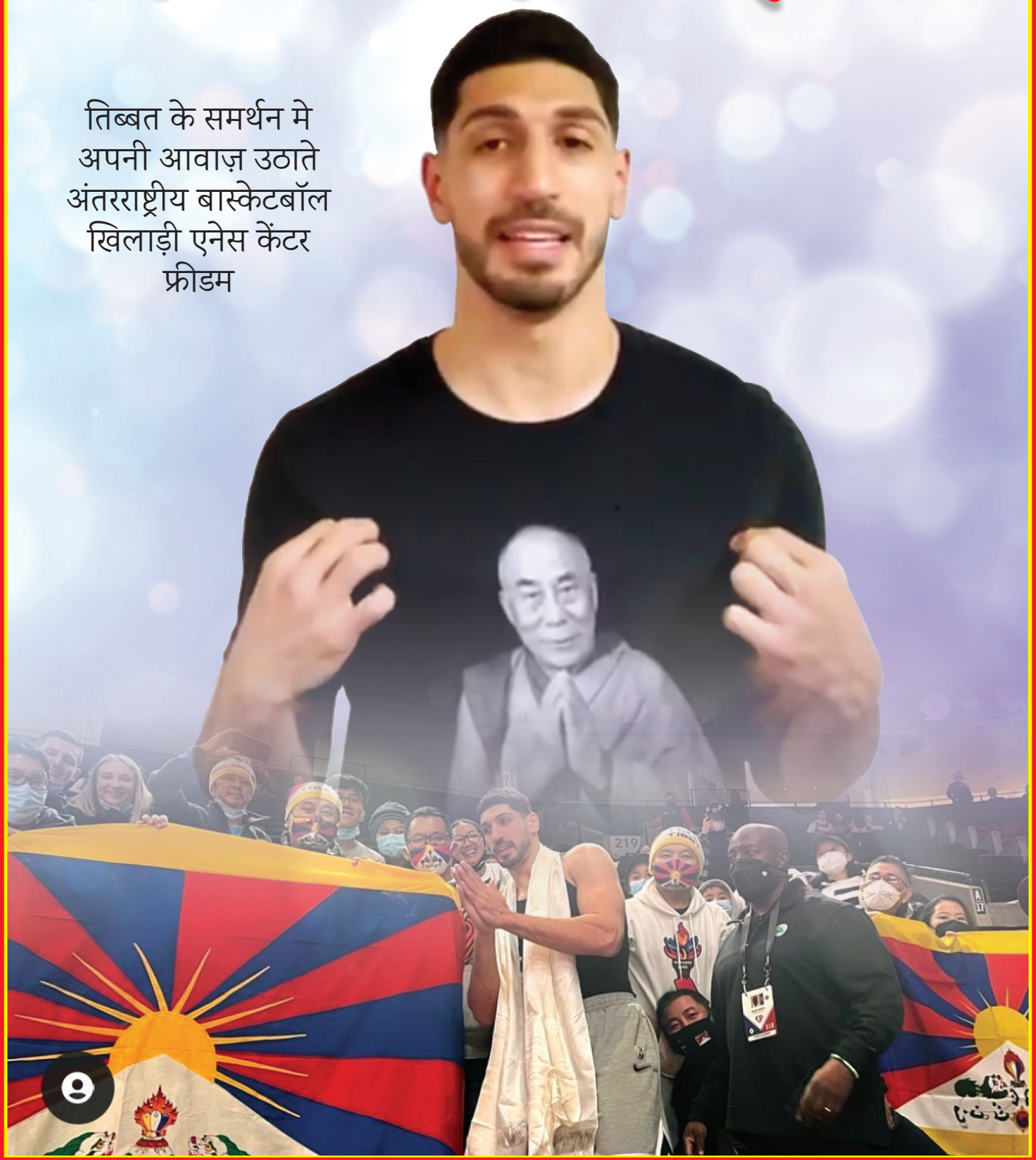

तिब्बत के समर्थन मे अपनी आवाज़ उठाते अंतरराष्ट्रीय बास्केटबॉल खिलाड़ी एनेस केंटर फ्रीडम

मूल्य :10 रु , वार्षिक : 100 रु

अक्टूबर, 2021 वर्ष : 42 अंक :10

तिब्बत देश

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका पहली बार 1979 में प्रकाशित

तिब्बत के बारे में सही जानकारी के साथ हर महीने आपके हाथो में

आभासी बैठक मे जुड़े परम पवन दलाई लामा

प्रधान संपादक
जमयंग दोरजी , जिगमे सुलट्रिम

सलाहकार संपादक
प्रो. श्यामनाथ मिश्र , डा. अतुल कुमार

प्रबंध संपादक
तेनजिन पलजोर , तेनजिन जोरदेन

वितरण प्रबंधक
जामयंग छोपेल, छोन्यी छेरिंग

संपादकीय एवं प्रकाशन कार्यालय :
भारत तिब्बत समन्वय केन्द्र
एच -१० लाजपत नगर -३
नई दिल्ली -११००२४, भारत

तिब्बत देश में प्रकाशित विचरों से संपादक, प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

इसमें प्रकाशित सामग्री का उपयोग अन्यत्र किया जा सकता है। कृपया तिब्बत देश का उल्लेख अवश्य करें ।

समाचार -

करुणा और गरिमा 1

जलवायु सम्मेलन कॉप-26 को परम पावन दलाई लामा का संदेश 2

राजनीतिक, सैन्य और आर्थिक रूप से सशक्त होने के बावजूद, चीन में नैतिक शक्ति का अभाव है: रोम में आईपीएसी सम्मेलन में सिक्योंग 3

सिक्योंग ने मिलान में तिब्बत समर्थकों से मुलाकात की, तिब्बती समुदाय को संबोधित किया 4

तिब्बती राजनीतिक कैदी पांच साल की सजा काटने के बाद रिहा 5

सीटीए ने भारत का ७५वां स्वतंत्रता दिवस मनाया 6

चीन ने जेल में ही दिवंगत हुए लोकप्रिय तिब्बती भिक्षु की यादें मिटाईं
टुल्कु तेनज़िन डेलेक की रहस्यमय परिस्थितियों में मृत्यु हो गई थी। समर्थकों ने उनकी सजा को गलत करार दिया था। 7

तिब्बती युवा कांग्रेस ने हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल और सिक्योंग पेनपा सेरिंग की मेजबानी की 8

चौंतड़ा के तिब्बती लोगों ने गांधी जयंती पर स्वच्छ भारत अभियान मनाया 9

भारत-तिब्बत संघ ने राष्ट्रीय कार्यकारिणी की वर्चुअल बैठक आयोजित की 10

समाचार -

भारत-तिब्बत सहयोग मंच ने दुनिया को १९६२ के युद्ध और कम्युनिस्ट चीन के झूठ की याद दिलाई 11

तिब्बत संग्रहालय ने अंतरराष्ट्रीय प्रवासन और मानवाधिकार ऑनलाइन फोरम (इंटरनेशनल माइग्रेशन एंड ह्यूमन राइट्स लिया ऑनलाइन फोरम) में भाग 12

स्पीकर ने तिब्बती मुद्दों का समर्थन करने के लिए एनबीए खिलाड़ी एनेस कनेटर का आभार व्यक्त किया 13

मेक्सिको में तिब्बत समर्थक समूह ने चीन के दमन के कारण मारे गए तिब्बतियों के सम्मान में ऑफ्रेंडा मनाया 14

सेंटर एनेस कैंटर के 'फ्री तिब्बत' बयान के बाद चीनी मीडिया ने बोस्टन सेल्टिक्स खेलों को हटाया 15

जिनेवा फोरम में विशेष पैनल ने तिब्बत के ११वें पंचेन लामा का मुद्दा उठाया 16

वांग जुन्झेंग: क्या बीजिंग 'टीएआर' को और अधिक सुरक्षित बनाने का इरादा रखता है? 17

चीन को 'दुनिया का दिल' मिटाने से रोकें 18

विचार

क्लाउडी आरपी

चीन को 'दुनिया का दिल' मिटाने से रोकें

मुद्रक एवं प्रकाशक जमयांग दोरजी द्वारा प्रेम गुलाटी , डोली ऑफसेट प्रिंटर्स , डी -१५२ , एफ. एफ. सी. ओखला , नई दिल्ली -११००२० से मुद्रीत

तिब्बत के बारे में नियमित जानकारी के लिए भारत - तिब्बत समन्वय केन्द्र की वेबसाइट
www.indiatibet.net
Email:
indiatibet7@gmail.com

अपनी बात

चीन में होने वाले शीतकालीन ओलंपिक के बहिष्कार की अपील

चीन में फरवरी 2022 में होने वाले शीतकालीन ओलंपिक के बहिष्कार की बढ़ती संभावना स्वागतयोग्य है। मानवाधिकारों का हनन तथा अन्तरराष्ट्रीय कानूनों का उल्लंघन करते हुए चीन अपनी विस्तारवादी नीति पर चल रहा है। उसके लिये मानवीय मूल्य, लोकतंत्र तथा पर्यावररा-संरक्षण महत्वहीन विषय हैं। वर्तमान चीनी राष्ट्रपति शी जिंपिंग की सर्वाधिक रुचि ऐसी व्यवस्था मजबूत करने में है जिसके अन्तर्गत वे आजीवन अपने पद पर बने रहें। अपनी शक्ति बढ़ाने के लिये वे चीन के साम्यवादी दल, संवैधानिक संस्थाओं एवं प्रावधानों में लगातार फेरबदल करने में तत्पर हैं।ऐसे पीड़ादायक वातावरण में चीन सरकार ओलम्पिक आयोजित करके विश्व जनमत को केवल गुमराह करेगी।

तिब्बत, इनरमंगोलिया, हांगकांग, ताइवान तथा पूर्वी तुर्किस्तान चीनी उपनिवेशवाद के शिकार हैं। तथाकथित "एक चीन नीति" के नाम पर चीन सरकार अपने पड़ोसी देशों की संप्रभुता समाप्त करने में लगी है। वह पड़ोसी देशों को स्वतंत्र देश नहीं मानती। उन्हें चीन का ही अभिन्न अंग बताने में जुटी है। इसके लिये वह इतिहास को झुठला रही है। ऐतिहासिक प्रमाणों के अनुसार चीन की सीमा का मतलब है चीन की दीवार। चीन की दीवार के बाहर के भू-भाग पर चीन का नियंत्रण अवैध कब्जा है। तिब्बत इसी अवैध चीनी नियंत्रण के विरुद्ध 1959 से संघर्षरत है।

तिब्बत एक स्वतंत्र देश था। यह भारत और ची न के बीच बफर स्टेट (मध्यस्थ राज्य) था। बलपूर्वक चीन ने 1959 में तिब्बत को अपने नियंत्रण में ले लिया। तिब्बत, इनरमंगोलिया, हांगकांग, ताइवान और पूर्वी तुर्किस्तान को भी बलपूर्वक चीन में मिलाने की चीनी चाल को विफल करना होगा। चीन लगातार इन देशों के विरुद्ध सैनिक कार्यवाही की तैयारी में लगा है। चीन प्रारंभ से साम्राज्यवादी नीति पर अग्रसर है। ऐसे साम्राज्यवादी चीन द्वारा ओलम्पिक का आयोजन निंदनीय है।

अपने राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा तथा एकता-अखंडता एवं संप्रभुता के संरक्षण के लिये साम्राज्यवादी चीनी सैन्य तैयारी के विरुद्ध भारत ने अपनी दृढ़ता का परिचय देकर सराहनीय कार्य किया है। गलवान घाटी में भारत की सैनिक कार्यवाही से चीन को पराजित होना पड़ा है। भारत लगातार सीमावर्ती क्षेत्र में बुनियादी सेवाओं का विस्तार कर रहा है। सैनिक उपकरणों की तैनाती भी बढ़ाई जा रही है। इससे भारतीय सेना का मनोबल मजबूत हुआ है और भारतीय जनता भी तथाकथित "हिन्दी चीनी भाई भाई" के मायाजाल से मुक्त हुई है। ऐसे अनुकूल वातावरण में भारत सरकार से अपेक्षा है कि वह यथासंभव चीन द्वारा कराये जा रहे ओलंपिक का विरोध करे। भारत का मित्र और क्वाड सदस्य ऑस्ट्रेलिया भी विरोध में है। रूस एवं चीन के साथ भारत की मीटिंग में भारत द्वारा इसके समर्थन से तिब्बती और तिब्बत समर्थक अप्रसन्न हैं। उनका मत है कि किसी भी स्तर पर भारत द्वारा इसके समर्थन से चीनी विस्तारवाद को मजबूती मिलेगी। क्वाड में शामिल अमरीका का मत भी यही है।

तिब्बती एवं तिब्बत समर्थक कई संगठन चीन में ओलंपिक के आयोजन के कूटनीतिक बहिष्कार हेतु सुव्यवस्थित रूप से अभियान चला रहे हैं। विश्व के अनेक देश कूटनीतिक बहिष्कार में शामिल होंगे, ऐसी उम्मीद है। ये देश और संगठन इस विचार के हैं कि चीन सरकार मानवाधिकारों का सम्मान एवं संरक्षण नहीं कर रही है इसलिये वहाँ ओलंपिक का आयोजन नहीं होना चाहिये। इसके बहिष्कार से चीन के अलोकतांत्रिक व्यवहार पर रोक लगेगी। इससे अन्तरराष्ट्रीय कानून तथा मानवीय मूल्यों की गरिमा मजबूत होगी।

तिब्बती लोगों एवं तिब्बत समर्थकों की लोकतांत्रिक मूल्य, अन्तरराष्ट्रीय कानून, मानवाधिकार, पर्यावरण तथा प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के प्रति समर्पण का ही प्रमाण है कि वयोवृद्ध तिब्बती धर्मगुरु परमपावन दलाई लामा कोरोना महामारी से उत्पन्न संकट के बावजूद शिक्षण, प्रशिक्षण, प्रवचन एवं संवाद की प्रक्रिया में प्राचीन भारतीय परंपरा में निहित मानवीय मूल्यों, जो कि लोकतंत्र के आधार हैं, की मजबूती की सलाह देते हैं। शांति,अंहिसा,करुणा तथा मैत्री ही लोकतंत्र के आधार हैं। चीन ने साजिशपूर्वक कोरोना महामारी को विश्वभर में फैलाया है। पूरे विश्व को संकट में डालकर वह स्वयं इस महामारी को कमाई का साधन बना चुका है। वह आर्थिक के साथ अन्य कई प्रकार के लाभ भी इससे उठा रहा है, क्योंकि उसके लिये मानवीय मूल्य अनुपयोगी हैं। उसके लिये "वसुधैव कुटुम्बकम्" एक निरर्थक विचार है।

लेकिन तिब्बती शांति-अंहिसा की राह पर हैं। गत 2 अक्टूबर, 2021 को केन्द्रीय तिब्बती प्रशासन द्वारा धर्मशाला (हिमाचल प्रदेश) में आयोजित औपचारिक गांधी जयन्ती समारोह में प्रधानमंत्री अर्थात् सिक्योंग पेम्पा त्सेरिंग ने इसी विचार पर बल दिया। परमपावन दलाईलामा के आशीर्वाद से तिब्बती संघर्ष शांतिपूर्ण और अहिंसक है। पेंपा त्सेरिंग ने बताया कि वार्ता से ही तिब्बत समस्या का हल निकलेगा।

तिब्बती प्रधानमंत्री पेंपा त्सेरिंग ने भारत के उत्तर पूर्वी प्रदेशों में स्थित विभिन्न तिब्बती बस्तियों के अपने प्रवास में भी तिब्बती संघर्ष को ज्यादा व्यापक और निर्णायक बनाने की बात कही। उन्होंने " मध्यममार्ग" के विचार को स्पष्ट करते हुए कहा कि अपने ही संविधान और कानून के अनुरूप चीन सरकार तिब्बत को वास्तविक स्वायत्तता प्रदान करे, तिब्बत के संपूर्ण भौगोलिक क्षेत्र पर शासन का अधिकार तिब्बती समुदाय को मिले तथा प्रतिरक्षा और अंतरराष्ट्रीय विभाग चीन अपने पास रखे। इससे चीन की संप्रभुता की सुरक्षा के साथ ही तिब्बत को स्वशासन का अधिकार मिल जायेगा।

प्रो. श्यामनाथ मिश्र
पत्रकार एवं अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग
राजकीय महाविद्यालय, तिजारा (राजस्थान)
मो.-9079352370, 8764060406
E-mail & Facebook: - shyamnathji@gmail.com

• करुणा और गरिमा

dalailama.com, २६ अक्टूबर, २०२१

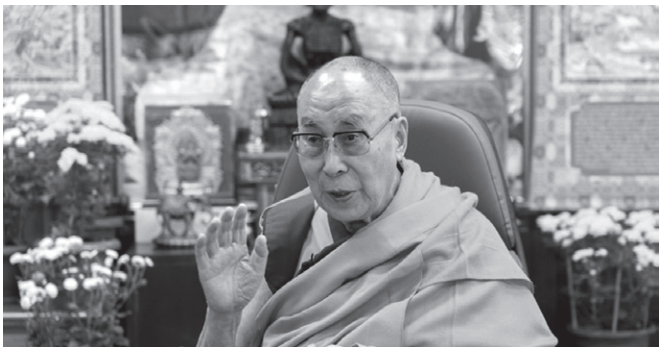

आभासी बैठक मे जुड़े परम पवन दलाई लामा

थेकछेन छोलिंग, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश, भारत। आज २६ अक्तूबर, २०२१ की सुबह परम पावन दलाई लामा द्वारा अपना आसन ग्रहण करने के बाद बोल्डर के कोलोराडो विश्वविद्यालय के कुलपति फिलिप पी. डिस्टेफ़ानो ने स्कूलों में करुणा और गरिमा के बारे में बात करने के लिए उनका स्वागत किया। भविष्य में करुणा और गरिमा की महत्ता का आकलन करते हुए उन्होंने कहा कि ये गुण कितने महत्वपूर्ण हैं। २०१६ में जब परम पावन अंतिम बार बोल्डर में थे, उसी समय क्राउन इंस्टीट्यूट की नींव डाली जा रही थी। आज, यह अंतःविषय संस्थान कल्याण, कनेक्शन और समुदाय पर केंद्रित है। कुलपति ने अपने संबोधन को समापन करते हुए कहा, 'चाहे आप एक शिक्षक, माता-पिता या व्यक्तिगत पर्यवेक्षक हों, मुझे आशा है कि आप आज रात यहां व्यक्त किए गए ज्ञान से प्रेरित होंगे।'

रेनी क्राउन वेलनेस इंस्टीट्यूट की निदेशक और यूनिवर्सिटी ऑफ कोलोराडो, बोल्डर में मनोविज्ञान एवं न्यूरोसाइंस विभाग की प्रोफेसर सोना डिमिडजियन ने कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए घोषणा की कि परम पावन की शिक्षाओं ने दुनिया भर के लोगों को शिक्षा में करुणा के लाभों के बारे में जिज्ञासा पैदा करने के लिए प्रेरित किया है। इस बीच, वैज्ञानिकों के साथ उनकी बातचीत ने नए शोध को प्रेरित किया है, जिसने करुणा प्रशिक्षण के सकारात्मक प्रभावों का प्रदर्शन किया है।

उन्होंने कहा कि वह और उसके सहयोगी एक ऐसा कार्यक्रम बनाना चाहते थे, जो उनके सभी शिक्षण और सुरक्षित, समावेशी और न्यायपूर्ण स्कूलों के निर्माण की नींव के रूप में करुणा की उनकी साधना को और गहराई प्रदान कर सके। उन्होंने करुणा को शिक्षा की मुख्यधारा में लाने के प्रयास में करुणा की साधना में 'अपने आप में और स्कूलों में करुणा और गरिमा की प्रतिष्ठा (कल्टीवेटिंग कंपैशन एंड डिग्निटी इन आवरसेल्व्स एंड आवर स्कूल्स)' शीर्षक से एक साल के लंबे कार्यक्रम को तैयार करने के लिए प्रशिक्षकों और विशेषज्ञों के साथ मिलकर काम किया। उन्होंने परम पावन को शिक्षा में करुणा के महत्व के बारे में बोलने के लिए आमंत्रित किया।

परम पावन ने अपने संबोधन की शुरुआत 'धन्यवाद' ज्ञापित करने के साथ की। उन्होंने कहा 'आपने मुझे आंतरिक मूल्यों के बारे में बात करने का अवसर देकर मुझे बहुत बड़ा सम्मान दिया है। यह काफी सरल है; मुझे लगता है कि सभी संवेदनशील प्राणी, यानि कि हमारे ग्रह पर सभी जीवित चीजें शांति में रहना चाहते हैं। इनमें फूल और पेड़ भी शामिल हैं, जिन्हें हम मानते हैं कि इनमें कोई चेतना नहीं होती है। यह शायद एक रूसी व्यक्ति थे, जिन्होंने मुझसे कहा था कि यदि आप हर दिन एक पौधे से डांट कर बातें करते हैं और दूसरे पौधे से आराम से बात करते हैं, तो वे अलग तरह से विकसित होते हैं। सीधे शब्दों में कहें, अगर हम पौधों की देखभाल करते हैं तो वे अच्छी तरह से विकसित होते हैं। अगर हम उनकी उपेक्षा करते हैं तो वे मर जाते हैं।

उन्होंने कहा, 'हमारे ग्रह पर सभी स्तनधारी जीव जीवित रहना चाहते हैं और शांति से रहना उनके अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण है। वास्तविकता यह है कि जैसे ही हम पैदा होते हैं, हमारी माताएं हमारा ख्याल रखती हैं और हमारे साथ करुणा का व्यवहार करती हैं। अगर ऐसा नहीं होता तो हम मर जाते। धीरे-धीरे जैसे-जैसे हम बड़े होते हैं, हम अपने परिवार के सदस्यों के साथ करुणापूर्ण संबंध विकसित करते हैं, जो बाद में समुदाय के अन्य सदस्यों तक विस्तारित हो जाते हैं।'

'अतीत में, क्रोध और घृणा से बहुत अधिक हिंसा और हत्याएं हुई हैं। कुछ लोग सोच सकते हैं कि क्रोध किसी स्थिति में ऊर्जा लाता है, लेकिन यह केवल अल्पावधि के लिए ही उचित तथ्य है। आज के समय में मनुष्य शांति चाहता है, क्योंकि शांति ही जीवन का आधार है। एक अधिक शांतिपूर्ण विश्व का विकास करने के लिए हमें अपने भीतर भी झांकना होगा। जब हमारा मन शांत होता है और संकट में होता है, उस समय भले ही हाथ में कोई हथियार हो लेकिन हम उसका उपयोग करने के लिए इच्छुक नहीं होंगे।'

'अंततः मन की शांति की नींव प्रेममयी करुणा है। हर दिन जैसे ही मैं जागता हूं, मैं करुणा का ध्यान करता हूं और यह मुझे शांति और धैर्य प्रदान करता है। यह केवल अशांति से मुक्त होने की बात नहीं है, बल्कि प्रेम और करुणा से प्रेरित होने की बात है। मन की शांति केवल एक धार्मिक विषय नहीं है; यह मानवता के अस्तित्व को भी रेखांकित करता है। जो हमें परेशान करते हैं, वे भी इंसान हैं और हमारी करुणा के पात्र हैं।'

'हालांकि ऐसा लग सकता है कि क्रोध ऊर्जा लाता है। लेकिन जब हम इसे और करीब से देखेंगे तो पाएंगे कि हमें आंतरिक शक्ति आंतरिक शांति से प्राप्त होती है। क्रोध जो ऊर्जा लाता है वह न केवल अल्पकालिक होता है, बल्कि यह आत्म-विनाशकारी भी हो सकता है।'

'मेरे अपना अनुभव कहता है कि करुणा की साधना बहुत मददगार है। हर कोई शांतिपूर्ण जीवन जीना चाहता है और उस इच्छा को पूरा करने के लिए करुणा एक महत्वपूर्ण कारक है। चाहे आप अपनी भलाई या दूसरों की भलाई को बढ़ावा देने के लिए चिंतित हों, मूल रूप से इसमें परोपकार की भावना शामिल होती है। इसी तरह, चाहे आप अपने तत्कालिक या दीर्घकालिक कल्याण के लिए काम कर रहे हों, यदि आप वास्तव में परोपकारी मन- करुणामयी हृदय- को विकसित कर लेते हैं तो अल्पावधि में आप अपने भीतर शांति ही शांति महसूस करेंगे। इसका दीर्घकालिक लाभ शारीरिक सेहतमंदी और अच्छे स्वास्थ्य में दिखता है।'

'बात चाहे व्यक्तिगत कल्याण की हो या समाज की भलाई की, हम मानते हैं कि जब कोई सक्रिय रूप से अपने दिल-दिमाग में करुणा को धारण करता है तो यह उनके आसपास के वातावरण को बदल देता है। यही कारण है कि हम कह सकते हैं कि परोपकार की भावना-करुणामयी हृदय- कल्याण का स्रोत है।'

'अपने स्वयं के जीवन में, अक्सर सुबह-सुबह मैं अपने सामने बुद्ध की ऐसी प्रतिमा की कल्पना करता हूं जो मुझे कहती रहती हैं:

संसार में जो भी पीड़ित जन हैं वे अपनी खुशी पाने की इच्छा के कारण पीड़ित हैं।

संसार में जो भी खुश हैं, वे दूसरों को खुश देखने की इच्छा के कारण हैं। ८/१२९

जो दूसरों के दुखों को दूर करने में अपने सुख का बलिदान नहीं कर सकते हैं, उनके लिए बुद्धत्व निश्चित रुप से असंभव है- उन्हें सुख-दुख के चक्र में भी सुख नहीं प्राप्त हो सकता है। ८/१३१

इस प्रकार सुख से सुख की ओर बढ़ते हुए चिंतनशील व्यक्ति निराश हो सकता है? वह जाग्रत मन है जो घोड़े पर चढ़ने के बाद सारी थकान और श्रम को खत्म कर देता है। 7/३०

'यदि आपके हृदय में करुणा का वास हैं, तो अल्पावधि में मन की शांति और अधिक लचीला प्रतिरक्षा प्रणाली विकसित हो जाएगी। दूसरी ओर, यदि आपका मन उत्तेजित और अशांत है तो आप अपने भोजन का आनंद भी नहीं ले पाएंगे। और अगर आप वास्तव में गुस्से में हैं तो आप उस प्लेट को भी तोड़ सकते हैं, जिसमें आपको भोजन परोसा गया है।'

उपरोक्त पंक्तियां भारतीय गुरु शांतिदेव की एक पुस्तक से ली गई हैं। मैं हर दिन इनका पाठ करता हूं। इसके साथ मैं निम्नलिखित छंदों का भी पाठ करता हूं :

'अधिक क्यों कहें? अपने फायदे के लिए व्यग्र होने वाले मूर्ख और दूसरों के फायदे के लिए काम करने वाले साधु के बीच इस अंतर को ध्यान से देखें।' ८/१३०

परम पावन ने टिप्पणी की कि जानवर भी करुणा पसंद करते हैं। यदि आप कुत्ते के प्रति दयालु हैं, तो वह अपनी पूंछ हिलाता है। यदि आप इसे डांटते हैं, तो उसकी पूंछ झुक जाती है। उन्होंने कहा कि जब हम युवा होते हैं तो प्रेम-करुणा महत्वपूर्ण होती है, लेकिन जैसे-जैसे हम बड़े होते हैं, हम इस पर कम ध्यान देते हैं। यह गलत बात है। आखिरकार, शिक्षा का उद्देश्य हमारे मन की शांति में योगदान देना होना चाहिए। इसलिए हमें सौहार्दता पर अधिक ध्यान देना चाहिए।

हम ऐसे सामाजिक प्राणी हैं जिन्हें साथ रहना चाहते हैं। यही हकीकत है। हम सभी सात अरब मनुष्यों को भाई और बहन के रुप में रहना चाहिए। यदि हम केवल राजनीति, धन और हथियारों के बारे में सोचते हैं तो हम कभी भी अपनी किसी भी समस्या का समाधान नहीं कर पाएंगे।

परम पावन ने निष्कर्ष के तौर पर कहा, 'इसलिए मैं अपने दैनिक जीवन में सौहार्दता को बढ़ावा देने के लिए समर्पित हूं। इस पर हमें ध्यान देना है।'

सोना डिमिडजियन ने कई शिक्षकों और प्रशिक्षकों को चिह्नित किया, जो प्रश्न पूछना चाहते थे। सबसे पहले परम पावन ने मन में आगे अच्छी भावनाओं को रखने की आवश्यकता पर बल दिया। उदाहरण के लिए उन्होंने इंगित किया कि धैर्य और सहनशीलता करुणा से उत्पन्न होती है, लेकिन केवल तभी प्रासंगिक और प्रभावी होती है जब हम कठिनाइयों का सामना कर रहे होते हैं। जब चीजें ठीक चल रही हों तो हमें धैर्य रखने की जरुरत नहीं है। यह ठीक उसी तरह है जैसे हम दवा तभी लेते हैं, जब बीमार होते हैं।

उन्होंने कहा कि दूसरों की पीड़ा को पहचानने का गुण है जो हमें दयालु होने के लिए प्रेरित करता है। सैन्य बल और हथियारों की तैनाती से दुख को दूर नहीं किया जा सकता है। हमें एक करुणामय मन विकसित करना होगा। यही आंतरिक शांति का स्रोत है जो अधिक शांतिपूर्ण विश्व के निर्माण की ओर ले जाएगा।

परम पावन ने कहा कि अपने पाठों को सीखने के लिए उत्सुक होने के अलावा, सरल मनुष्य के रुप में विद्यार्थी करुणामय व्यवहार चाहते हैं। जब उनके शिक्षक जिम्मेदारी और चिंता की भावना के साथ उनकी व्यापक संभावनाओं के लिए दयालुता का व्यवहार करते हैं, तो छात्रों की प्रतिक्रिया सकारात्मक होती है। हालांकि, अगर छात्रों को लगता है कि शिक्षक को उनकी कोई चिंता नहीं है और वे केवल अपना वेतन पाने के लिए काम कर रहे है, तो छात्र जल्दी ही कक्षा से ऊब जाते हैं और वे उसे छोड़ने का भी मन बना लेते हैं।

परम पावन ने कहा, 'अपनी पढ़ाई के दौरान मेरे शिक्षक ने मेरे साथ अपने बच्चे की तरह व्यवहार किया था, उन्होंने मुझ पर बहुत दया रखी। परिणामस्वरुप, मैं उनके साथ अधिक से अधिक समय बिताना चाहता था। ऐसी सौहार्दता हमें खुश और सुरक्षित महसूस कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।'

'अगर मैं कहूं कि दलाई लामा बहुत लोकप्रिय हैं, तो यह इसलिए नहीं है कि मैं लोकप्रिय बनना चाहता हूं। बल्कि इसलिए कि लोग हमेशा मेरे चेहरे पर मुस्कान देखते हैं। और ऐसा इसलिए है क्योंकि मैं सौहार्दता को आत्मसात करता हूं।'

परम पावन ने दोहराया कि यदि शिक्षक न केवल पाठ्यक्रम के अनुसार पढ़ाएं, बल्कि वास्तव में अपने छात्रों के कल्याण के बारे में भी चिंतित रहें तो उनके बीच घनिष्ठ संबंध विकसित होंगे। जब एक शिक्षक वास्तव में मानवता की भलाई के लिए समर्पित होता है तो वह स्वाभाविक रुप से अपने छात्रों के साथ सम्मान के साथ व्यवहार करेगा।

जहां तक न्याय और करुणा का संबंध है, अतीत में आंतरिक मूल्यों के बारे में बहुत कम बात की जाती थी। इसके बजाय, लोग संदेह और बल प्रयोग पर निर्भर थे। लेकिन दुनिया बदल गई है और अब सौहार्द की बहुत बड़ी भूमिका है। अभिवृत्तियां अधिक यथार्थवादी और अधिक परिपक्व होती हैं। मन की शांति प्राप्त करने के महत्व की स्पष्ट समझ है। इस बारे में भी अधिक जागरुकता आ गई है कि करुणामय होना मानव का मूल स्वभाव है। अधिक करुणामय प्रेरणा का पोषण करने से अधिक सत्य और ईमानदारी प्राप्त होती है।

पूरे स्कूल को और अधिक करुणामय बनाने के बारे में बात करते हुए परम पावन ने दोहराया कि चूंकि शिक्षा भौतिकवादी लक्ष्यों की ओर उन्मुख है, इसलिए इसके पाठ्यक्रम में सौहार्द को भी महत्व देने और शामिल करने की आवश्यकता है। करुणा से मन की शांति मिलती है और ऐसी आंतरिक शांति शिक्षकों और छात्रों के बीच स्वास्थ्य और कल्याण को बढ़ावा देती है। उन्होंने अपना यह दृढ़ विश्वास घोषित किया कि शिक्षा के लिए एक नया दृष्टिकोण अपनाना संभव है, जो सौहार्दता में निहित है।

उन्होंने कहा कि करुणा साहस और दृढ़ संकल्प का आधार है। इन गुणों की आवश्यकता है क्योंकि दुख को तुरंत दूर नहीं किया जा सकता है। हमें यथार्थवादी होना होगा। हमें इसके कारणों की तलाश करनी चाहिए और उन्हें जड़ से उखाड़ फेंकना चाहिए। यह कुछ ऐसा है जो हम मनुष्य कर सकते हैं क्योंकि हमारे पास बुद्धि और आत्मविश्वास है।

परम पावन ने दोहराया कि बच्चों को करुणा के बारे में सिखाने के लिए सबसे

महत्वपूर्ण बात यह है कि मानवीय बुद्धि को सौहार्दता के साथ संयोजित किया जाए।

सोना डिमिडजियन ने बातचीत में योगदान के लिए परम पावन को धन्यवाद दिया और करुणा संस्थान के कार्यकारी निदेशक स्टीफन बटलर से समापन संबोधन प्रस्तुत करने के लिए कहा। उन्होंने परम पावन को इस अंतर्दृष्टि के लिए धन्यवाद दिया कि करुणा के मौलिक मानवीय गुण में हमारे जीवन और दुनिया को बदलने की शक्ति है। उन्होंने इच्छा व्यक्त की कि परम पावन के पास एक लंबा और स्थिर जीवन है और हम सभी करुणा को एक दयालु और अधिक देखभाल करने वाली मानवता के बीज, पोषण और फल के रूप में स्थापित करने के लिए पूरी कोशिश कर सकते हैं।

अंत में परम पावन ने उत्तर दिया कि यदि मनुष्य को अधिक सुखी होना है तो शिक्षा को सौहार्दता के साथ जोड़ा जाना चाहिए। इसका उद्देश्य लोगों के लिए स्वस्थ, अधिक शांतिपूर्ण दिमाग विकसित करना है। भय क्रोध को जन्म देता है और क्रोध मन की शांति को नष्ट कर देता है। हम जितने अधिक दयालु होंगे, उतने ही कम भयभीत होंगे और हमारी आंतरिक शक्ति और आत्मविश्वास उतना ही अधिक होगा। बात एक खुशमिजाज व्यक्ति, आत्मविश्वासी और साहसी बनने की है।

परम पावन ने टिप्पणी की कि 'आप में से जिन्होंने आज की चर्चा में भाग लिया है या इसे सुना है, वे लोग महसूस करें कि हमने जो कुछ भी कहा है वह उचित था, कृपया इसके बारे में सोचें, इससे परिचित हों और इसे अपने परिवार और दोस्तों के बीच प्रचारित करें।'

'शुक्रिया। फिर मिलेंगे।'

• जलवायु सम्मेलन कॉप-26 को परम पावन दलाई लामा का संदेश

dalailama.com, ३१, अक्तूबर २०२१

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि आज हम जिस जलवायु आपातकाल का सामना कर रहे हैं, उसके बारे में बात करने और उसका समाधान करने के लिए संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन-कॉप26- स्कॉटलैंड के ग्लासगोमें होने जा रहा है।

ग्लोबल वार्मिंग एक जरूरी मुद्दा है। हममें से कोई भी अतीत को बदलने में सक्षम नहीं है। लेकिन हम सभी बेहतर भविष्य में योगदान देने की स्थिति में हैं। वास्तव में, यह सुनिश्चित करने के लिए कि हम सभी शांति और सुरक्षा में रह सकें, यह सुनिश्चित करना जरूरी है कि वर्तमान में दुनिया के साढ़े सात अरब से अधिक मनुष्यों के प्रति हमारी जिम्मेदारी है। आशा और दृढ़ संकल्प के साथ हमें अपने और अपने सभी पड़ोसियों के जीवन का ख्याल रखना चाहिए।

हमारे पूर्वजों ने पृथ्वी को समृद्ध और प्रचूर ग्रह के रूप में देखा है, जैसा कि यह है भी। लेकिन इससे भी अधिक यह हमारा एकमात्र घर है। हमें न केवल अपने लिए, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए और अनगिनत वैसी प्रजातियों के लिए भी, जिनके साथ हम इस ग्रह पर रहते हैं, इसकी रक्षा करनी चाहिए।

तिब्बती पठार को अक्सर 'तीसरा ध्रुव' कहा जाता है। यह उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों के बाद बर्फ का सबसे बड़ा भंडार है। तिब्बत दुनिया की कुछ प्रमुख बड़ी नदियों का स्रोत है, जिनमें ब्रह्मपुत्र, गंगा, सिंधु, मेकांग, सालवीन, पीली नदी और यांग्त्ज़ी शामिल हैं। ये नदियाँ जीवन का स्रोत हैं क्योंकि वे पूरे एशिया में लगभग दो अरब लोगों के लिए पेयजल, कृषि के लिए सिंचाई और जल विद्युत प्रदान करती हैं। तिब्बत के असंख्य ग्लेशियरों का पिघलना, नदियों को बांधना और मोड़ना तथा व्यापक वनों की कटाई इस बात के उदाहरण हैं कि कैसे एक क्षेत्र में पारिस्थितिक उपेक्षा के दुष्परिणाम लगभग हर जगह दुष्प्रभाव डाल सकते हैं।

आज, हमें भविष्य की समस्याओं को डर से प्रेरित प्रार्थनाओं से नहीं, बल्कि वैज्ञानिक समझ पर आधारित यथार्थवादी कार्रवाई करके सुलझाने की आवश्यकता है। हमारे ग्रह के निवासी अन्योन्याश्रित हैं, जैसे पहले कभी नहीं थे। हम जो कुछ भी करते हैं वह हमारे मानव प्राणियों के साथ-साथ असंख्य जानवरों और पौधों की प्रजातियों को प्रभावित करता है।

हम मनुष्य ही एकमात्र प्राणी हैं जो पृथ्वी को नष्ट करने की शक्ति रखते हैं, लेकिन हम ही हैं जो इसकी रक्षा करने की सबसे बड़ी क्षमता वाली प्रजाति हैं। हमें सभी के लाभ के लिए सम्मिलित होकर वैश्विक स्तर पर जलवायु परिवर्तन के मुद्दों का सामना करना चाहिए। लेकिन हमें व्यक्तिगत स्तर पर भी वह करना चाहिए जो हम कर सकते हैं। यहां तक कि छोटे-छोटे दैनिक कार्य, जैसे कि हम पानी का उपयोग कैसे करते हैं और जिस चीज की हमें जरूरत नहीं है उसका निपटान कैसे करते हैं। इसके भी परिणाम होते हैं। हमें अपने प्राकृतिक पर्यावरण की देखभाल को अपने दैनिक जीवन का हिस्सा बनाना चाहिए और यह सीखना चाहिए कि विज्ञान हमें क्या सिखाता है।

मैं यह देखकर उत्साहित हूं कि हमारी युवा पीढ़ी जलवायु परिवर्तन पर ठोस कार्रवाई की मांग कर रही है। यह भविष्य के लिए कुछ आशा प्रदान करता है। विज्ञान को सुनने और उसके अनुसार कार्य करने की आवश्यकता के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए ग्रेटा थुनबर्ग जैसे युवा कार्यकर्ताओं के प्रयास महत्वपूर्ण हैं। चूंकि उनका रुख यथार्थवादी है, हमें उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए।

मैं हर इंसान को अपना ही हिस्सा मानने के विचार के तहत नियमित रूप से मानवता की एकता की भावना को बनाए रखने के महत्व पर जोर देता हूं। ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन का खतरा राष्ट्रीय सीमाओं तक सीमित नहीं है, यह हम सभी को प्रभावित करता है।

जैसा कि हम एक साथ इस संकट का सामना करते हैं, यह अनिवार्य है कि हम इसके दुष्परिणामों को सीमित करने के लिए एकजुटता और सहयोग की भावना से कार्य करें। मैं आशा और प्रार्थना करता हूं कि हमारे नेता इस आपात स्थिति से निपटने के लिए सामूहिक कार्रवाई करने की ताकत जुटाएंगे और बदलाव के लिए समय सारिणी निर्धारित करेंगे। हमें एक सुरक्षित, हरित, खुशहाल दुनिया बनाने के लिए कार्य करना होगा।

• राजनीतिक, सैन्य और आर्थिक रूप से सशक्त होने के बावजूद, चीन में नैतिक शक्ति का अभाव है: रोम में आईपीएसी सम्मेलन में सिक्योंग

tibet.net, २९ अक्तूबर, २०२१

सिक्यांग पेंपा छेरिंग सम्मेलन मे अपनी बात रखते हुए

धर्मशाला। दुनिया भर के लगभग २०० सांसदों, राजनयिकों और विशेषज्ञों के एक निकाय 'चीन पर अंतर-संसदीय गठबंधन (आईपीएसी)' का सम्मेलन शुक्रवार, २९ अक्तूबर को रोम में आयोजित किया गया। इस प्रतिरोधी बैठक का उद्देश्य जी-२० लीडर्स समिट से पहले इसके नेताओं से चीनी सरकार के खिलाफ कठोर रुख अपनाने की मांग करना था।

केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) के सिक्योंग पेनपा त्सेरिंग उन नेताओं में शामिल थे, जिन्होंने चीन के पाखंड को उजागर किया और तिब्बतियों, उग्यूरों, ताइवानियों और हांगकांग वासियों के खिलाफ चीन के गैरकानूनी कार्यों का विस्तार से वर्णन किया। उन्होंने आईपीएसी जैसे मंच के प्रति अपना आभार व्यक्त किया कि चीनी सरकार के अधिनायकवादी और अन्यायपूर्ण शासन के विरोध में खुलकर प्रतिनिधित्व करने के अलावा उसने चीन के खिलाफ लड़ाई को आगे बढ़ाया। तिब्बतियों और अन्य लोगों के निर्विवाद अधिकार का बचाव करते हुए सिक्योंग ने जोर देकर कहा कि 'अधिनायकवाद के लिए कोई जगह नहीं है'।

जी-२० के लोकतांत्रिक देशों के सदस्यों को संबोधित करते हुए सिक्योंग ने जोर देकर कहा, 'अपने ही देशों में स्वतंत्रता होना पर्याप्त नहीं है क्योंकि पूरी दुनिया मनुष्यों का एक अन्योन्याश्रित समुदाय है। यह सर्वोपरि है कि आप यह सुनिश्चित करें कि आप अपने देशों में जिन मूल्यों का पालन करते हैं, वे चीनी सरकार जैसे अधिनायकवादी देशों के नागरिकों के लिए भी उपलब्ध हों'।

चूंकि जी-२० जलवायु परिवर्तन जैसे प्रमुख मुद्दों पर भी ध्यान केंद्रित करता है, सीटीए के सिक्योंग ने सदस्यों से तिब्बती पठार के सामने आने वाले जलवायु मुद्दे को उठाने और उस पर चर्चा करने की अपील की, जिसे व्यापक रुप से तीसरे ध्रुव के रूप में जाना जाता है। उन्होंने एशिया की प्रमुख नदियों में तिब्बत के योगदान पर जोर दिया। तिब्बती पठार पर्माफ्रॉस्ट का सबसे बड़ा भंडार है, इसे देखते हुए कि चीन पर जलवायु परिवर्तन के खिलाफ उसके रवैये के लिए सख्त कार्रवाई होनी चाहिए। सिक्योंग ने कहा कि इसे भी देखा जाना चाहिए कि चीन पर्यावरणीय मुद्दों और जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए किस तरह का प्रयास करता है। हालांकि उसके प्रयास में बहुत कम पारदर्शिता है।

सिक्योंग ने वर्गीकृत करते हुए कहा कि चीन हमेशा एक सामंजस्यपूर्ण समाज के बारे में बात करता है, लेकिन वास्तव में वह वैश्विक असामंजस्य में प्रमुख पक्षकार है। भारतीय सीमा के अतिक्रमण करने के आक्रामक प्रयास भारत के खिलाफ चीन के जुझारूपन को उजागर करता है, उसी तरह ताइवान के खिलाफ दक्षिण चीन सागर को नियंत्रित करने का उसका प्रयास है। उन्होंने उल्लेख किया कि इन मामलों में चीन जिस तरह का बर्ताव कर रहा है वह निस्संदेह रुप से आपत्तिजनक है।

सिक्योंग पेनपा त्सेरिंग ने कहा, 'राजनीतिक, सैन्य और आर्थिक रुप से सशक्त होने के बावजूद चीन में नैतिक शक्ति का अभाव है।' सिक्योंग ने अपने संबोधन का समापन चीन से अंतरराष्ट्रीय समुदाय में विश्वास बनाने के साथ तरीके बदलने का आग्रह करते हुए किया।

उसी सम्मेलन में, अमेरिका, यूरोप, कनाडा, जापान और भारत आदि जैसे लोकतांत्रिक देशों के सांसदों ने सर्वसम्मति से चीन को मानवाधिकारों के हनन के लिए जवाबदेह ठहराया और दुनिया भर के देशों को धमकियां देने से बाज आने की चेतावनी भी दी।

• सिक्योंग ने मिलान में तिब्बत समर्थकों से मुलाकात की, तिब्बती समुदाय को संबोधित किया

tibet.net, ०१ नवंबर, २०२१

सिक्यांग पेंपा छेरिंग इटली-मिलान के तिब्बत समर्थक समूह के साथ

रोम और मिलान। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के सिक्योंग पेनपा त्सेरिंग ने शनिवार, ३० अक्तूबर की सुबह मिलान में सीनेटर रॉबर्टो रैम्पी और तिब्बत समर्थक समूह (टीएसजी) के सदस्यों से मुलाकात की।

तिब्बत समर्थकों के साथ अपनी बातचीत में उन्होंने तिब्बत के लिए उनके अटूट समर्थन के लिए आभार व्यक्त किया और एक उपयोगी परिणाम प्राप्त करने के लिए एक-दूसरे के सहयोग से काम करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने निर्वासन में तिब्बती लोगों की स्थिति और केंद्रीय तिब्बती प्रशासन की गतिविधियों के बारे में भी बात की।

अन्योन्याश्रयता की अवधारणा पर बोलते हुए सिक्योंग ने कहा कि हम सभी एक-दूसरे पर निर्भर हैं और हमें आपके समर्थन की आवश्यकता है, जबकि तिब्बती निर्वासितों द्वारा लाए गए तिब्बती बौद्ध धर्म के गहन ज्ञान से आपको भी लाभ हुआ है। उन्होंने कहा, 'हम यहां एक-दूसरे के प्रति आभार व्यक्त कर रहे हैं। यह अन्योन्याश्रितता और आपसी प्रशंसा का प्रतीक है। तिब्बतियों के निर्वासन में आने का एक सकारात्मक पहलू यह है कि तिब्बती बौद्ध धर्म पश्चिम में फलने-फूलने लगा है। अगर तिब्बत स्वतंत्र रहता तो ऐसा नहीं होता।'

उन्होंने कहा कि 'यह भी एक सच्चाई है कि आप जैसे तिब्बत समर्थकों के समर्थन और प्यार के कारण तिब्बत मुद्दा जिंदा है। ६० साल पहले जब से परम पावन दलाई लामा निर्वासन में आए, तिब्बती लोगों ने लगातार प्रगति की है। तिब्बतियों का नेतृत्व अब लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित नेतृत्व कर रहा है। हालांकि, तिब्बती लोगों ने अब तक जो कुछ भी हासिल किया है, वह परम पावन दलाई लामा के प्रयासों का परिणाम है। हम तिब्बतियों को इसे कभी नहीं भूलना चाहिए।'

उन्होंने कहा, 'तिब्बत के अंदर की स्थिति के मामले में हालात बदतर होते जा रहे हैं, भले ही यह उग्यूर और हांगकांग के मुद्दे की तरह हाई प्रोफाइल नहीं है। उदाहरण के लिए तिब्बती भाषा अत्यधिक दबाव में है। चीन जानते हैं कि यदि तिब्बती भाषा का सफाया कर दिया गया तो तिब्बती बौद्ध धर्म और संस्कृति दोनों विलुप्त हो जाएगी।'

गेफीलिंग बौद्ध संस्थान में तिब्बती समुदाय के साथ बातचीत में सिक्योंग ने उन्हें यात्रा के दौरान अपनी व्यस्तताओं के बारे में ताजा जानकारियों से अवगत कराया। उन्होंने विशेष रूप से इटली पहुंचने पर दक्षिण टायरॉल के राष्ट्रपति और अन्य गणमान्य व्यक्तियों के साथ अपनी बैठकों के बारे में बताया।

उन्होंने वास्तविक स्वायत्तता की मांग जैसी राजनीतिक समस्याओं को हल करने के लिए राजनीतिक संकल्प के महत्व के बारे में भी बात की। उन्होंने समझाया, 'यदि केंद्र और क्षेत्रीय सरकार दोनों की राजनीतिक इच्छा है तो इटली में दक्षिण टायरॉल के मामले की तरह ही अन्य किसी भी राजनीतिक संघर्ष को हल किया जा सकता है। १९९३ से, हम दक्षिण टायरॉल सरकार के संपर्क में हैं और हम तिब्बती दक्षिण टायरॉल के मामले को एक संदर्भ बिंदु के रूप में देखते हैं। इसलिए यहां आने के बाद से मैं दक्षिण टायरॉल के साथ व्यक्त किए गए संबंधों को मजबूत करने के लिए दक्षिण टायरॉल सरकार के अध्यक्ष से मिला।'

सिक्योंग ने इटली के साथ तिब्बत के प्राचीन संबंधों के बारे में भी संक्षेप में बताया। उन्होंने तिब्बत और इटली के बीच प्राचीन संबंधों को रेखांकित करते हुए कहा, 'ऐतिहासिक रूप से इटली के साथ तिब्बत के संबंध गहरे और प्राचीन हैं। १७वीं शताब्दी से इतालवी जेसुइट और कैपुचिन मिशनरियों ने तिब्बत में प्रवेश करना शुरू किया। १३वीं सदी में भी इटली के पादरी तिब्बत में आए थे। कुछ लोग कहते हैं कि इतालवी खोजकर्ता मार्को पोलो विशेष रूप से कोकोनोर क्षेत्र के आसपास तिब्बत आए हो सकते हैं।' सिक्योंग ने तिब्बत के लिए विशेष रूप से अपने एमईपी दिवंगत मार्को पैनेला जैसे नेताओं के माध्यम से समर्थन के लिए इटली के प्रति भी आभार व्यक्त किया।

सिक्योंग ने परम पावन दलाई लामा के तिब्बती लोगों के प्रति अपार योगदान पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा, 'तथ्य यह है कि तिब्बती लोग आज आधुनिक शिक्षा और सापेक्ष समृद्धि का लाभ उठा रहे हैं। यह सब परम पावन दलाई लामा की दूरदर्शी दृष्टि और प्रयासों के कारण है।' उन्होंने आगे कहा कि चूंकि उन्हें तिब्बती लोगों द्वारा सिक्योंग की भूमिका सौंपी गई है, वे तिब्बती लोगों के कल्याण और चीन-तिब्बत संघर्ष को हल करने के लिए तिब्बती चार्टर के अनुसार काम करेंगे। उन्होंने समझाया कि समाज में समस्याएं तब उत्पन्न होती हैं जब लोग जान-बूझकर या अनजाने में नियमों और विनियमों का दुरुपयोग या गलत व्याख्या करते हैं।

सिक्योंग ने सहयोगात्मक प्रयासों और पहलों के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने वांछित परिणाम प्राप्त करने के लिए जनता के सहयोग और समर्थन का आह्वान किया और स्पष्ट किया कि अकेले सिक्योंग या कशाग ही सब कुछ नहीं कर सकते। उन्होंने कहा, 'लोगों और कशाग के संयुक्त प्रयासों से ही हम कुछ हासिल कर सकते हैं।' उन्होंने तिब्बती प्रशासन की गतिविधियों के बारे में सूचित करते रहने के महत्व पर भी बात की और जहां आवश्यक हो वहां शामिल होने का आग्रह किया। उन्होंने बताया कि तिब्बत और केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए आप कई तरह के समाचार आउटलेट पर जा सकते हैं।

सिक्योंग ने शाही काल से तिब्बती इतिहास को शाक्यपा, फागमोद्रुपास, रिनपुंगपास, देपा त्सांगपास और फिर गदेन फोडंग सरकार के क्रमिक शासन के अध्ययन की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा, 'हमें पता होना चाहिए कि उस समय क्या हुआ था और तिब्बत में १८वीं शताब्दी के बाद क्या परिवर्तन हुए थे? तिब्बती इतिहास की पक्की समझ के बिना, संकीर्ण क्षेत्रीय और सांप्रदायिक संघर्ष में शामिल होना गैर-जिम्मेदाराना कदम है, खासकर जब हमारे पास अपनी कहने के लिए एक मुट्ठी जमीन भी नहीं है। ऐसा लगता है कि हममें से कुछ लोग यह समझने में पूरी तरह से गलत हैं कि हमारा असली दुश्मन कौन है।'

परम पावन दलाई लामा द्वारा परिकल्पित मध्यम मार्ग दृष्टिकोण के बारे में बोलते हुए सिक्योंग ने उस राजनीतिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की व्याख्या की, जिसके तहत मध्यम मार्ग का दृष्टिकोण आया। उन्होंने कहा कि तिब्बती संस्कृति और तिब्बती बौद्ध धर्म का सार तिब्बती भाषा में संरक्षित है।

• तिब्बती राजनीतिक कैदी पांच साल की सजा काटने के बाद रिहा

freetibet.org, ३० अक्तूबर २०२१

गेंदुन दपाका को २०१५ में 'अलगाववाद उकसाने' के आरोप में मनमाने ढंग से हिरासत में लिया गया था

सूत्रों ने फ्री तिब्बत को पुष्टि की है कि २०१५ में थांगकोर सोकत्सांग मठ से मनमाने ढंग से गिरफ्तार किए गए तिब्बती भिक्षुओं में से एक को 'अलगाववाद उकसाने' के आरोप में पांच साल की जेल की सजा काटने के बाद रिहा कर दिया गया है।

४५ वर्षीय गेंदुन दपाका रिहा होने के बाद अगस्त २०२१ में अपने घर लौट आए, लेकिन तब से खराब स्वास्थ्य के कारण अस्पताल में भर्ती हैं। संचार माध्यमों पर लगे कठोर प्रतिबंधों के कारण उनकी स्थिति के बारे में और जानकारी प्राप्त करना असंभव हो गया है।

रिहाई के बावजूद गेंदुन दपाका की स्वतंत्रता सशर्त है। अनिश्चितकालीन पैरोल पर उन्हें हर महीने पुलिस स्टेशन में हाजिरी लगाने की आवश्यकता होती है और वह और उसका परिवार दोनों सरकारी निगरानी के अधीन हैं।

२४ अगस्त २०१५ को चीनी सशस्त्र पुलिस ने थांगकोर सोक्त्सांग मठ, न्गाबा पर छापा मारकर गेंदुन दपाका और लोबसंग शेरब को कमरे से जबरन हिरासत में ले लिया था।

एक साल से अधिक समय तक हिरासत में रहने के बाद दोनों भिक्षुओं को 'अलगाववाद उकसाने' और 'निर्वासित तिब्बतियों को जानकारी लीक करने' के आरोप में गुप्त मुकदमे में सजा सुनाई गई थी। इस जोड़ी को क्रमशः पांच और चार साल की जेल की सजा सुनाई गई थी। सुनवाई के दौरान न तो उन्हें अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार कानून के तहत आवश्यक कानूनी मदद दी गई और न ही उन्हें अपना बचाव करने का अवसर दिया गया।

गुप्त रूप से चली सुनवाई में इन भिक्षुओं के परिवार के सदस्यों में से किसी को भी उन्हें देखने की अनुमति नहीं थी और जो पर्यवेक्षक उपस्थित हुए थे, उनकी कड़ी जांच की गई थी।

उन पर जिस कथित अलगाववाद को उकसाने का आरोप लगाया गया था, वह असल में २०१५ में तिब्बती खानाबदोशों द्वारा आयोजित शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन था। भर्मा गांव, न्गाबा में सरकारी भूमि जब्ती के विरोध में आयोजित विरोध-प्रदर्शन में शामिल होने का आरोप इन दोनों भिक्षुओं पर नहीं लगाया गया था। बल्कि इन पर आरोप यह था कि इन्होंने बाहरी लोगों को इन विरोध-प्रदर्शनों की जानकारी लीक की है।

ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यावरण के अधिक अनुकूल गांवों के निर्माण के उद्देश्य से २०१० में सरकारी भूमि अधिग्रहित की गई थी। इससे ४०० एकड़ जमीन और २० परिवारों के घर इसके दायरे में आ गए और उन्हें विस्थापित होना पड़ा था। हालांकि, बाद में इन योजनाओं को छोड़ दिया गया था। लेकिन जमीन उनके मूल निवासियों के सौंपने की बजाय चीनी अधिकारी निजी निगमों को भूमि पट्टे पर दे रहे हैं।

सूचना *Tibet Watch* से मिली।

• चीन ने जेल में ही दिवंगत हुए लोकप्रिय तिब्बती भिक्षु की यादें मिटाईं

टुल्कु तेनज़िन डेलेक की रहस्यमय परिस्थितियों में मृत्यु हो गई थी। समर्थकों ने उनकी सजा को गलत करार दिया था।

rfa.org, २०२१.१०.२८

तिब्बती सूत्रों का कहना है कि चीनी अधिकारियों ने सिचुआन जेल में एक लोकप्रिय तिब्बती धार्मिक शिक्षक की मृत्यु के छह साल बाद उनके बारे में सार्वजनिक चर्चाओं पर प्रतिबंध लगा दिया है। उनके बारे में जानकारी आधिकारिक धार्मिक इतिहास से हटा दिया गया है और उनकी याद में चलाए जा रहे एक ऑनलाइन चैट समूह को बंद कर दिया है।

सिचुआन की प्रांतीय राजधानी चेंगदू में एक सार्वजनिक चौक पर अप्रैल २००२ में बमबारी के आरोप में गिरफ्तार ६५ वर्षीय टुल्कु तेनज़िन डेलेक को २२ साल की सजा सुनाई गई थी। इसमें से १३ साल की सजा काटने के बाद १२ जुलाई, २०१५ कोजेलमें ही उनकी रहस्यमय परिस्थितियों में मृत्यु हो गई थी। अधिकार समूहों और समर्थकों ने उनकी इस सजा को गलत तरीके से दिया गया बताया।

तिब्बती संस्कृति और पर्यावरण की रक्षा के उनके प्रयासों के लिए तिब्बतियों के बीच व्यापक रूप से सम्मानित डेलेक को शुरू में मौत की सजा दी गई थी। लेकिन बाद में उनकी सजा को आजीवन कारावास में बदल दिया गया। उनके एक सहायक लोबसांग डोंड्रब को लगभग तुरंत ही फांसी दे दी गई थी, जिसके कारण अधिकार कार्यकर्ताओं ने इस मुकदमे की निष्पक्षता पर सवाल उठाया था।

निर्वासन में रह रहे एक तिब्बती स्रोत के अनुसार, सिचुआन के कार्दजे (चीनी : गांज़ी) तिब्बती स्वायत्त प्रिफेक्चर में न्यागचु (चीनी : यजियांग) काउंटी में मठों को अब चीनी अधिकारियों ने अपने प्रतिष्ठानों के इतिहास से कार्दज़े के इस विख्यात धार्मिक व्यक्ति के संदर्भों को हटाने के लिए मजबूर कर दिया है।

क्षेत्र में अपने संपर्कों की सुरक्षा के लिए नाम न छापने की शर्त पर आरएफए के सूत्र ने कहा, 'इन मठों के इतिहास का दस्तावेजीकरण का आदेश चीनी सरकार द्वारा दिया गया था। इसी आधार पर तिब्बतियों ने इनके इतिहासों को संकलित किया और फिर उन्हें जनता के बीच वितरित किया।'

सूत्र ने कहा, 'इन पुस्तकों को पढ़ने वाले कई तिब्बती यह देखकर निराश हुए कि उनमें टुल्कु तेनज़िन डेलेक के बारे में कुछ भी नहीं कहा गया है और उन्होंने सोशल मीडिया पर एक-दूसरे के साथ इस बारे में चर्चा करना शुरू कर दिया। सूत्र ने बताया कि इसके बाद चीनी सरकार ने आदेश दिया कि 'इस चैट ग्रुप को बंद किया जाए।'

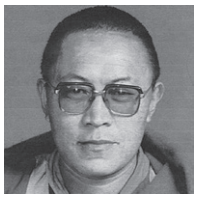

टुल्कु तेनज़िन डेलेक

उन्होंने कहा कि लगभग ५०० सदस्यीय ऑनलाइन समूह के कई सदस्यों को बाद में पुलिस ने पूछताछ के लिए बुलाया।

उन्होंने कहा, 'टुल्कु तेनज़िन डेलेक ने खाम नालंदा थेकचेन जंगचुब चोलिंग मठ के पुनरुद्धार में मुख्य भूमिका निभाई। लेकिन इस मठ के इतिहास में न तो उनका नाम और न ही इससे जुड़ी उनकी किसी भी गतिविधि का उल्लेख किया गया है।'

अगस्त २०१६ में तिब्बत से भागने के बाद अमेरिका में रह रहीं टुल्कु तेनज़िन डेलेक की भतीजी न्यिमा ल्हामो ने बताया कि डेलेक तिब्बतियों के बीच उनकी भलाई का काम करने के लिए प्रसिद्ध थे और तिब्बत की भाषा और संस्कृति के संरक्षण के लिए व्यापक रूप से काम कर रहे थे।

ल्हामो ने सम्मानित रिनपोछे को टुल्कु तेनज़िन डेलेक के बारे में बयान देते हुए उद्धृत करते हुए कहा, 'चीनी सरकार द्वारा तिब्बतियों के दिमाग से रिनपोछे की सभी यादों को मिटाने का प्रयास उसकी गलती है।'

उन्होंने कहा, 'सरकार तिब्बतियों के घावों पर नमक छिड़क रही है। लेकिन वे कितनी भी कोशिश कर लें, तिब्बती और अंतरराष्ट्रीय समुदाय रिनपोछे के बलिदान और विरासत को हमेशा याद रखेंगे।'

उन्होंने कहा, 'ये कभी नहीं मिटेंगे।'

पूर्व में स्वतंत्र राष्ट्र रहे तिब्बत पर ७० साल पहले चीन ने आक्रमण किया था और बलपूर्वक उसे चीन में शामिल कर लिया था।

चीनी अधिकारियों ने तिब्बत और पश्चिमी चीन के तिब्बती क्षेत्रों पर अपना कठोर नियंत्रण बना रखा है। तिब्बतियों की राजनीतिक गतिविधियों और सांस्कृतिक और धार्मिक पहचान की शांतिपूर्ण अभिव्यक्ति को प्रतिबंधित कर दिया गया है और तिब्बतियों को उत्पीड़न, यातना, कारावास और न्यायेतर हत्याएं की जा रही हैं।

आरएफए की तिब्बती सेवा के लिए संग्याल कुंचोक द्वारा रिपोर्ट की गई। तेनज़िन डिक्की द्वारा अनूदित। रिचर्ड फिने द्वारा अंग्रेजी में लिखित।

• तिब्बती युवा कांग्रेस ने हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल और सिक्योंग पेनपा सेरिंग की मेजबानी की

tibet.net, १३ अक्तूबर, २०२१

हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल श्री राजेंद्र विश्वनाथ अर्लेकर, केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के सिक्योंग पेनपा छेरिंग और विशिष्ट अतिथि (बीटीएसएम) के संस्थापक श्री इंद्रेश कुमार।

धर्मशाला। निर्वासन में स्थित सबसे बड़े तिब्बती गैर-सरकारी संगठनों में से एक, तिब्बती युवा कांग्रेस ने मंगलवार १२ अक्तूबर को तिब्बती प्रदर्शन कला संस्थान (टीआईपीए) में एक भव्य रात्रिभोज की मेजबानी की। स्वागत समारोह में मुख्य अतिथि हिमाचल प्रदेश के माननीय राज्यपाल महामहिम श्री राजेंद्र विश्वनाथ अर्लेकर थे। सम्मान के अतिथि केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के सिक्योंग पेनपा त्सेरिंग थे और विशिष्ट अतिथि भारत-तिब्बत सहयोग मंच (बीटीएसएम) के संस्थापक श्री इंद्रेश कुमार थे।

स्वागत समारोह में अन्य मेहमानों और गणमान्य व्यक्तियों में निर्वासित तिब्बत के मुख्य न्यायिक आयुक्त और पूर्व टीवाईसी अध्यक्ष सोनम नोरबू डागपो, १७वीं निर्वासित तिब्बती संसद के स्पीकर खेंपो सोनम तेनफेल, १७वीं निर्वासित तिब्बती संसद की डिप्टी स्पीकर डोल्मा त्सेरिंग, १७वीं तिब्बती संसद के सदस्य, उपायुक्त निपुण जिंदल, पुलिस अधीक्षक डॉ कुशल चंद शर्मा, अनुविभागीय दंडाधिकारी हरीश गज्जू, अतिरिक्त उपायुक्त राहुल कुमार आदि उपस्थित थे।

तिब्बती युवा कांग्रेस (टीवाईसी) के अनुरोध पर सिक्योंग पेनपा त्सेरिंग ने भारत के लोगों और हिमाचल प्रदेश के लोगों को तिब्बतियों की ओर से प्रशंसा और कृतज्ञता के प्रतीक के रूप में राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ अर्लेकर और श्री इंद्रेश कुमार को पारंपरिक तिब्बती थंगका भेंट की।

गाला डिनर रिसेप्शन में टीआईपीए के कलाकारों द्वारा सांस्कृतिक प्रदर्शन किया गया, जिन्होंने स्थानीय गद्दी लोक नृत्य सहित कई तिब्बती लोक गीत और सांस्कृतिक नृत्य प्रस्तुत किए।

• चौंतड़ा के तिब्बती लोगों ने गांधी जयंती पर स्वच्छ भारत अभियान मनाया

tibet.net, ०२ अक्तूबर २०२१

गांधी जयंती पर स्वच्छ भारत अभियान मे जुड़े

धर्मशाला। ०२ अक्तूबर को गांधी जयंती के अवसर पर भारतीय भाइयों और बहनों के प्रति एकजुटता और सद् भाव प्रदर्शित करने के लिए चौंतरा के तिब्बती बंदोबस्त कार्यालय और तिब्बती खंपा औद्योगिक सोसायटी बीर-चौंतरा ने संयुक्त रूप से स्वच्छ भारत अभियान के तहत कार्यक्रम का आयोजन किया।

आज सुबह चौंतड़ा बस्ती के बास्केटबॉल मैदान में एक लघु कार्यक्रम का आयोजन किया गया। नागनचेन बंदोबस्त अधिकारी श्रीमती पेमा यूडॉन ने लोगों को कार्यक्रम और स्वच्छ भारत मिशन के बारे में बताया। इसके बाद गरम पंचायत प्रधान श्रीमती बंधना देवी और उपाध्यक्ष श्री रैबत राम का भाषण हुआ। इसके बाद डेगे बंदोबस्त अधिकारी श्री त्सेरिंग फुंट्सोक द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

सभा के औपचारिक समापन के बाद चौंतरा के डेगे और नांगचेन तिब्बती बस्तियों के सभी निवासियों ने स्वच्छ भारत मिशन में भाग लिया और चौंतरा के चारो ओर के क्षेत्रों की सफाई की।

• भारत-तिब्बत संघ ने राष्ट्रीय कार्यकारिणी की वर्चुअल बैठक आयोजित की

tibet.net, ०८ अक्तूबर, २०२१

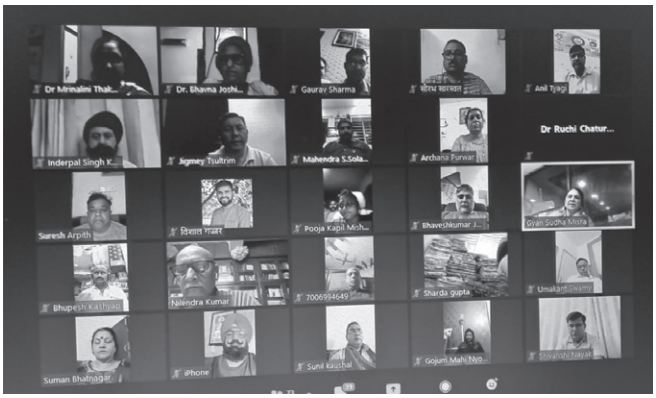

भारत-तिब्बत संघ ने राष्ट्रीय कार्यकारिणी की वर्चुअल बैठक

एक नवगठित भारतीय तिब्बत समर्थक समूह 'भारत-तिब्बत संघ (बीटीएस)' ने गुरुवार, ०७ अगस्त २०२१ को अपनी राष्ट्रीय कार्यकारिणी की वर्चुअल बैठक आयोजित की। बैठक का मुख्य एजेंडा स्वतंत्रता और न्याय के लिए तिब्बती आंदोलन को गति देना और पवित्र कैलाश-मानसरोवर को कम्युनिस्ट चीन के चंगुल से मुक्त कराना था। बैठक में संगठन के राष्ट्रीय पदाधिकारियों, राज्य कार्यकारी अधिकारियों और प्रांतीय सदस्यों की भागीदारी रही। बैठक में विशिष्ट अतिथि के

रूप में कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज-इंडिया के राष्ट्रीय सह-संयोजक श्री सुरेंद्र कुमार; भारतीय जनता पार्टी महिला मोर्चा की उपाध्यक्ष श्रीमती पूजा कपिल मिश्रा और भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय, दिल्ली के समन्वयक श्री जिग्मे त्सुल्ट्रिम उपस्थित थे।

भारत के सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश और संगठन की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती ज्ञान सुधा मिश्रा, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मेजर जनरल (सेवानिवृत्त) नीलेंद्र कुमार, पूर्व एयर वाइस मार्शल ओपी तिवारी, वृंदावन, उत्तर प्रदेश के रेव सुनील कौशल जी, आंध्र प्रदेश से श्री माधवन जी, गंगोत्री, उत्तराखंड के श्री रावल हरीश सेमवाल और अन्य बैठक में मौजूद रहे।

संगठन के राष्ट्रीय महासचिव श्री सौरभ सारस्वत ने पूरी बैठक का संचालन किया। इस बैठक में संगठन का नया नाम 'भारत-तिब्बत संघ' के रूप में प्रस्तावित किया गया, जिसे सभी सदस्यों ने सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया। श्रीमती ज्ञान सुधा मिश्रा ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा, 'चीन से तिब्बत की मुक्ति के लिए कई संगठन काम कर रहे हैं। तिब्बत की आजादी, भारत की सुरक्षा और कैलाश-मानसरोवर की कम्युनिस्ट चीन के अवैध कब्जे से मुक्ति सभी का अंतिम लक्ष्य है। हमें तिब्बत के लिए काम करने वाले हर संगठन के साथ तालमेल बिठाकर लक्ष्य हासिल करना चाहिए।'

सदस्यों ने देशवासियों से आम तौर पर चीनी उत्पादों का बहिष्कार करने और विशेष रूप से वर्तमान त्योहारी मौसम के दौरान इनके बहिष्कार के साथ ही भारतीय निर्मित स्वदेशी उत्पादों और वस्तुओं को खरीदने की अपील की। उन्होंने 'वोकल फॉर लोकल' नारे का उपयोग करते हुए स्वदेशी और स्थानीय उत्पादों के लिए घर-घर प्रचार-प्रसार करने पर भी चर्चा की। इस प्रकार, आने वाले दिनों में लोगों को चीनी उत्पादों को न खरीदने के लिए समझाया जाएगा और 'अपनी दिवाली, अपने लोगो के लिए दिवाली' के अवसर पर स्थानीय उत्पादों को विभिन्न अभियानों और सोशल मीडिया के माध्यम से बढ़ावा दिया जाएगा।

• भारत-तिब्बत सहयोग मंच ने दुनिया को १९६२ के युद्ध और कम्युनिस्ट चीन के झूठ की याद दिलाई

tibet.net, २१ अक्तूबर, २०२१

भारत तिब्बत सहयोग मंच के महिला कार्यकर्ता

चाणक्यपुरी, नई दिल्ली। प्रमुख तिब्बत समर्थक समूह 'भारत-तिब्बत सहयोग मंच' ने १५० से अधिक सदस्यों के साथ, २० अक्तूबर १९६२ के चीनी आक्रमण की बरसी पर यहां विरोध-प्रदर्शन किया। चीनी आक्रमण के दौरान हजारों भारतीय सैनिक मारे गए थे और इसने दोनों देशों के बीच २९ अप्रैल १९५४ को हुए पंचशील समझौते को कमजोर कर दिया। बीटीएसएम अपने संरक्षण श्री इंद्रेश कुमार के नेतृत्व में ०५ मई १९९९ को अपनी स्थापना के समय से ही तिब्बती मुद्दे के सबसे मजबूत समर्थकों में से एक रहा है। यह संगठन पिछले कई वर्षों से चीनी दूतावास के पास इसे लेकर विरोध प्रदर्शन करता रहा है और दुनिया को कम्युनिस्ट चीन द्वारा तिब्बतियों और उसके पड़ोसी देशों के प्रति की गई क्रूरता और अमानवीय कृत्य की याद दिलाता रहा है। विरोध- प्रदर्शन के दौरान सदस्यों ने 'तिब्बत में हत्या बंद करो', 'चीन अक्साई चिन छोड़ो', 'तिब्बत की आजादी और कैलाश-मानसरोवर की मुक्ति', 'चीन वापस जाओ' जैसे नारे लगाए।

राजधानी दिल्ली में विरोध रैली के अलावा, चंडीगढ़, अवध, छत्तीसगढ़, अंबाला और चित्तौड़ में बीटीएसएम की क्षेत्रीय इकाइयों ने आंदोलन को आगे बढ़ाया और इस महत्वपूर्ण दिन के बारे में जागरुकता पैदा की। बीटीएसएम के पूरे भारत में २५० से अधिक चैप्टर हैं और यह तिब्बती मुद्दे के सबसे सक्रिय समर्थकों में से एक है।

विरोध-प्रदर्शन में बीटीएसएम के राष्ट्रीय महासचिव श्री पंकज गोयल, दिल्ली के क्षेत्रीय अध्यक्ष श्री अनिल मोंगा, दिल्ली में विभिन्न तिब्बती समुदायों के प्रतिनिधि, विशेष रूप से क्षेत्रीय तिब्बती महिला संघ, क्षेत्रीय तिब्बती स्वतंत्रता आंदोलन, क्षेत्रीय तिब्बती युवा कांग्रेस, आईटीसीओ और अन्य स्थानीय तिब्बती समुदाय शामिल हुए।

• तिब्बत संग्रहालय ने अंतरराष्ट्रीय प्रवासन और मानवाधिकार ऑनलाइन फोरम (इंटरनेशनल माइग्रेशन एंड ह्यूमन राइट्स लिया ऑनलाइन फोरम) में भाग

tibet.net, २१ अक्तूबर, २०२१

धर्मशाला। तिब्बत संग्रहालय के निदेशक ताशी फुंट्सोक ने २० अक्तूबर २०२१ को अंतरराष्ट्रीय प्रवासन और मानवाधिकार ऑनलाइन फोरम (इंटरनेशनल माइग्रेशन एंड ह्यूमन राइट्स ऑनलाइन फोरम) में भाग लिया। ऑनलाइन फोरम का आयोजन राष्ट्रीय मानवाधिकार संग्रहालय ताइवान, फेडरेशन ऑफ इंटरनेशनल ह्यूमन राइट्स म्यूजियम एशिया पैसिफिक और इंटरनेशनल कोएलिशन ऑफ साइट्स ऑफ कॉनसाइंस द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था।

पैनलिस्टों में से एक श्री ताशी को 'ट्रांसनेशनल माइग्रेंट्स: इंक्लूसिविटी एंड एक्सक्लूसिविटी इन इमिग्रेशन हिस्ट्रीज़' विषय पर बोलने के लिए आमंत्रित किया गया। श्री ताशी ने भारत और नेपाल में तिब्बती शरणार्थियों की स्थिति पर एक

प्रस्तुति दी। उन्होंने तिब्बत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, चीन के कब्जे और बाद में परम पावन दलाई लामा और तिब्बतियों के भारत, नेपाल और भूटान में पलायन, हाल के पलायन के रुझान और भारत और नेपाल में तिब्बती शरणार्थियों की वर्तमान स्थिति पर विस्तार से अपनी बात रखी। उन्होंने शरणार्थी कार्ड और निवास अधिकार, शिक्षा और रोजगार की स्थिति और तिब्बती संस्कृति और राजनीतिक अधिकारों के दमन में नेपाल में तिब्बतियों के सामने आने वाली चुनौतियों पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने नए चीन-नेपाल समझौते २०१९ के संभावित परिणाम पर ध्यान दिलाकर सत्र का समापन किया कि यदि इस समझौते को लागू किया जाता है तो हजारों तिब्बतियों को वापस तिब्बत भेज दिया जाएगा।

पैनल के अन्य वक्ताओं में नेशनल म्यूज़ियम ऑफ़ इमिग्रेशन हिस्ट्री, फ़्रांस के नेटवर्क एंड पार्टनरशिप्स डिपार्टमेंट के प्रमुख एग्नेस आर्केज़ रोथ; अमेरिका के एंजेल आइलैंड इमिग्रेशन स्टेशन के निदेशक एड. टेपपोर्न और नेशनल म्यूजियम ऑफ ताइवान हिस्ट्री, ताइवान के पब्लिक सर्विस एंड एजूकेशन डिवीजन के एसोसिएट क्यूरेटर और लीडर चिया-नी वू शामिल थे।

• स्पीकर ने तिब्बती मुद्दों का समर्थन करने के लिए एनबीए खिलाड़ी एनेस कनेटर का आभार व्यक्त किया

tibet.net, ०१ नवंबर, २०२१

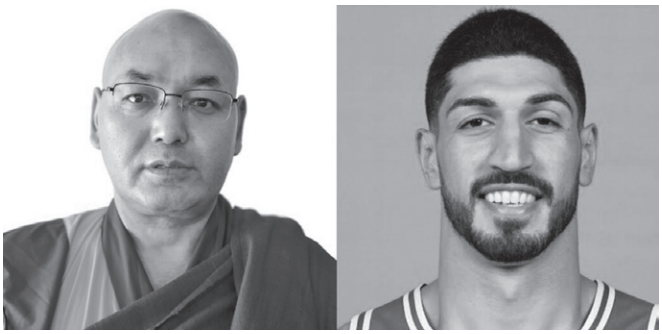

निर्वासित तिब्बती संसद के अध्यक्ष खेंपो सोनम तेनफेल और अंतरराष्ट्रीय बास्केटबॉल खिलाड़ी एनेस कैंटर

धर्मशाला।१७वीं तिब्बती निर्वासित संसद के अध्यक्ष खेंपो सोनम तेनफेल ने तिब्बत में रह रहे और दुनिया भर में निर्वासन में रह रहे तिब्बतियों की ओर से राष्ट्रीय बास्केटबॉल एसोसिएशन (एनबीए) के बोस्टन सेल्टिक्स के पेशेवर बास्केटबॉल खिलाड़ी एनेस कैंटर का उनके तिब्बत को लेकर निरंतर अमूल्य समर्थन के लिए आभार व्यक्त किया।

एनबीए खिलाड़ी को लिखे गए एक पत्र में स्पीकर ने लिखा, 'सच्चाई के साथ आपकी एकजुटता के लिए हम बहुत खुश और आभारी हैं। आपने जो आवाज उठाई है, उससे पता चलता है कि आप सच्चाई और न्याय का कितना समर्थन करते हैं।'

'१९५९ में चीनी कम्युनिस्ट शासन द्वारा तिब्बत पर अवैध आक्रमण कर कब्जा कर लिया गया था। इसके बाद से तिब्बती न केवल बुनियादी और मौलिक मानवाधिकारों से वंचित हैं बल्कि, उनका जबरन शिविरों में ब्रेनवाश किया जाता है। लाखों लोग अपने घरों के भीतर व्यापक निगरानी के बीच डर के माहौल में रहते हैं।'

झिंझियांग के सीसीपी सचिव वांग जुन्झेंग का तिब्बत में हालिया स्थानांतरण सीसीपी के उन तिब्बतियों के हर कदम को दबाने की मंशा को इंगित करता है जो तिब्बती होने के लिए अपने प्यार और गौरव को बनाए रखते हैं।

तिब्बत में क्रूर और अमानवीय अत्याचारों के इस दौर में हम तिब्बत में अपने भाइयों और बहनों के समर्थन में उठाई गई हर एक आवाज को महत्व देते हैं। हम भी हर इंसान की अंतरात्मा का आह्वान करते हैं कि वह बेजुबानों की आवाज बनें। इसलिए सच्चाई और न्याय के लिए आपकी स्थिति और आपकी आवाज ने उनके लिए आशा की एक किरण दी है।

• मेक्सिको में तिब्बत समर्थक समूह ने चीन के दमन के कारण मारे गए तिब्बतियों के सम्मान में ऑफ्रेंडा मनाया

tibet.net, ०१ नवंबर, २०२१

धर्मशाला। मेक्सिको में तिब्बत समर्थक समूह-तिब्बत एमएक्स- ने तिब्बत पर आक्रमण और कब्जे के बाद से सीसीपी द्वारा मारे गए तिब्बतियों के सम्मान में ऑफ्रेंडा मनाया। मैक्सिकन समाज में उनके 'डे ऑफ द डेड' बहुत ही महत्वपूर्ण अवकाश होता है। इस दिन हर साल मरने वाले रिश्तेदारों और दोस्तों की तस्वीरों के साथ वेदियां तैयार की जाती हैं; उन्हें याद करने और उनकी स्मृति को जीवित रखने के लिए भोजन, रोटी, पेय और फूल चढ़ाए जाते हैं।

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के साथ मेक्सिको सरकार की मिलीभगत और चुप्पी के विरोध में और तिब्बत में क्रूर मानवाधिकारों के उल्लंघन के बारे में नागरिकों को सूचित करने के लिए मेक्सिको सिटी में विदेश मंत्रालय की इमारत के सामने 'डे ऑफ द डेड' ऑफ्रेंडा प्रतिवर्ष आयोजित किया जाता है। इस वर्ष का ऑफ्रेंडा आदरणीय पाल्डेन ग्याल्त्सो, डॉ. अल्फ्रेडो मार्टिनेज मोरेनो और तिब्बत एमएक्स स्वयंसेवकों मार्था पोंस और नैन्सी फ्लोर्स को समर्पित किया गया था, जिनका इस वर्ष निधन हो गया। इन्होंने जीवित रहते हुए तिब्बती मुद्दों के लिए प्रयास करने में अपना जीवन समर्पित कर दिया था।

इस श्रद्धांजलि कार्यक्रम को बड़ी संख्या में वहां से आते-जाते लोगों ने देखा। हालांकि, बड़ी संख्या में लोग उस स्थिति से अनजान थे जिससे तिब्बती लोग गुजर रहे है। वे लोग यह जानकर आश्चर्यचकित थे कि तिब्बत में तिब्बती ध्वज या परम पावन दलाई लामा की तस्वीर रखना अलगाववादी होने का आरोपी बनने के लिए पर्याप्त है और ऐसा करनेवाले को कड़ी सजा भुगतनी पड़ती है।

इस कार्यक्रम में सड़क कलाकारों का एक रॉक समूह भी शामिल हुआ और तिब्बत एमएक्स को उपस्थित लोगों को तिब्बत और चीनी सरकार के शत्रुतापूर्ण व्यवहार के बारे में सूचित करने को कहा। 'ऑफ्रेंडा' के दौरान वहां आए हजारों लोगों को इस बारे में सूचित किया गया।

तिब्बत एमएक्स मेक्सिको में तिब्बत समर्थक समूह है और १२ से अधिक वर्षों से इस पारंपरिक डेड ऑफ्रेंडा दिवस का आयोजन कर रहा है।

• सेंटर एनेस कैंटर के 'फ्री तिब्बत' बयान के बाद चीनी मीडिया ने बोस्टन सेल्टिक्स खेलों को हटाया

espn.in, २१, अक्तूबर २०२१

सेंटर एनेस कैंटर के तिब्बत के प्रति समर्थन व्यक्त करते हुए खुद का दो मिनट का वीडियो ट्वीट करने और न्यूयॉर्क निक्स के खिलाफ बुधवार रात के खेल के दौरान 'फ्री तिब्बत' वाक्यांश के साथ जूते पहने फोटो ट्वीट करने के बाद चीनी मीडिया साइटों से बोस्टन सेल्टिक्स खेलों को हटा दिया गया है।

कैंटर ने बुधवार को ट्विटर और इंस्टाग्राम पर पोस्ट किए गए वीडियो में कहा, 'मैं यहां तिब्बत के समर्थन में अपनी आवाज मिलाने और तिब्बत में जो हो रहा है, उसके बारे में बोलने के लिए आई हूं। चीनी सरकार के क्रूर शासन द्वारा तिब्बती लोगों के मौलिक अधिकार और स्वतंत्रता का अपहरण कर लिया गया हैं। जब उन्होंने वीडियो पोस्ट किया तो उन्होंने चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग को 'क्रूर तानाशाह' कहा और तिब्बत के निर्वासित आध्यात्मिक नेता दलाई लामा की तस्वीर वाली शर्ट पहनी। इसके बाद उन्होंने चीन में जन्मे और ऑस्ट्रेलिया में रह रहे एक असंतुष्ट कार्टूनिस्ट और कलाकार बडिउकाओ द्वारा डिज़ाइन किए गए जूते पहन लिए।

गुरुवार को, चीनी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता वांग वेनबिन ने कहा कि कैंटर 'ध्यान आकर्षित करने की कोशिश कर रहे थे' और उनकी टिप्पणी 'खंडन करने लायक नहीं थी।' प्रवक्ता ने कहा, 'हम तिब्बत के विकास और प्रगति को बदनाम करने के लिए उन हमलों को कभी स्वीकार नहीं करेंगे।'

परम पावन दलाई लामा के वाशिंगटन डीसी स्थित कार्यालय ने बाद मे ईएसपीएन को एक बयान जारी किया जिसमें लिखा था, 'हम तिब्बत के समर्थन में बोलने के लिए एनबीए खिलाड़ी एनेस कैंटर के आभारी हैं। दो मिनट के वीडियो संदेश में उन्होंने चीनी कम्युनिस्ट शासन के तहत तिब्बतियों के सामने मौजूद अस्तित्व के खतरे का सार बताया। उनके द्वारा कहा गया हर शब्द सत्य है।' बयान में यह भी कहा गया है कि तिब्बती स्वतंत्रता की वकालत करने का एनेस कैंटर का 'साहसी कार्य' उनके व्यक्तिगत जीवन और करियर के लिए भारी जोखिम से भरा था।

शुक्रवार को कैंटर ने चीनी सरकार से 'उग्यूर लोगों को मुक्त करने' के लिए एक और ऑनलाइन वीडियो जारी किया। उग्यूर उत्तर-पश्चिमी चीन में एक जातीय समूह हैं। गुरुवार को ४३ देशों ने संयुक्त राष्ट्र के एक बयान पर हस्ताक्षर किए, जिसमें उग्यूरों के साथ चीन के व्यवहार पर चिंता व्यक्त की गई थी।

न्यूयॉर्क टाइम्स ने गुरुवार को बताया कि सेल्टिक्स गेम्स को टेनसेंट से वापस लिया गया था, जो चीनी कंपनी है जो एनबीए गेम्स (ईएसपीएन और टेनसेंट के बीच कंटेंट-शेयरिंग पार्टनरशिप है और टेनसेंट एनबीए का राइट पार्टनर है)। पिछला रिप्ले अब उपलब्ध नहीं है और आगामी गेम दिखाए जाने के लिए हम तैयार नहीं हैं।

फिलाडेल्फिया ७६ साल से जुड़े खेलों को भी चीन में स्ट्रीम नहीं किया जाता है। तत्कालीन ह्यूस्टन रॉकेट्स के कार्यकारी डेरिल मोरे, जो अब सिक्सर्स के बास्केटबॉल संचालन के अध्यक्ष हैं, ने दो साल बाद देश में एनबीए प्रेसीजन खेलों से पहले चीनी शासित हांगकांग में लोकतंत्र आंदोलन के लिए अपना समर्थन ट्वीट किया। चीनी सरकारी चैनल सीसीटीवी ने उसके बाद एनबीए खेलों का प्रसारण बंद कर दिया। व्यापक तौर पर लोकप्रिय ट्विटर के चीनी संस्करण वीबो पर एक सेल्टिक्स फैन ने अपने पेज ने कहा कि यह कैंटर की टिप्पणियों के बाद टीम के बारे में पोस्ट को आगे से रोक देगा। एनबीए और टेनसेंट ने स्थिति पर कोई टिप्पणी नहीं की है।

कैंटर ने भी टिप्पणी के लिए कहने पर भी तुरंत जवाब नहीं दिया। वह सेल्टिक्स के सीज़न के ओपनर में नहीं खेले, जो कि निक्स के लिए डबल-ओवरटाइम हार था।

कैंटर की टिप्पणी उस दिन आई जब २०२२ ओलंपिक खेलों की तैयारी के लिए ओलंपिक मशाल बीजिंग पहुंची, जिसने तिब्बत, उग्यूर मुसलमानों और हांगकांग के चीनी कार्रवाइयों के खिलाफ बहिष्कार का आह्वान किया था।

कैंटर की सामाजिक सक्रियता का एक लंबा इतिहास रहा है। वह तुर्की के राष्ट्रपति तैयप एर्दोगन के मुखर आलोचक रहे हैं और उन्हें २०१८ में एक सशस्त्र आतंकवादी समूह से संबंधित होने के आरोप में उनके अपने ही देश में आरोपित किया गया था, जिससे वे इनकार करते रहे हैं। उसका पासपोर्ट रद्द करने वाला तुर्की उसके प्रत्यर्पण की मांग कर रहा है।

इस रिपोर्ट में रॉयटर्स की जानकारी शामिल है।

• जिनेवा फोरम में विशेष पैनल ने तिब्बत के ११वें पंचेन लामा का मुद्दा उठाया

tibet.net, २ नवंबर, २०२१

जिनेवा। चौथे जेनेवा फोरम ने ०१ नवंबर को सम्मेलन के पहले दिन पंचेन लामा पर 'तिब्बत के चोरी हो गए बच्चे - ग्यारहवें पंचेन लामा गेधुन चोएक्यी न्यिमा (तिब्बत्स स्टोलेन चाइल्ड-११वें पंचेन लामा गेधुन चोएक्यी न्यिमा)' शीर्षक से एक विशेष पैनल चर्चा आयोजित की। चर्चा में पैनलिस्टों में केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के सिक्योंग पेनपा त्सेरिंग; इंटरनेशनल कंपेन फॉर तिब्बत (आईसीटी) के जर्मनी चैप्टर के कार्यकारी निदेशक काई मुलर; ताशी ल्हुनपो मठ के मठाधीश वें ज़ीक्याब रिनपोछे (तेनज़िन थुटेन रबग्याल) और सीटीए के सूचना और अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग (डीआईआईआर) के सचिव कर्मा चोयिंग शामिल थे। पैनल का संचालन डीआईआईआर के मानवाधिकार डेस्क के प्रमुख डूक्तेन-की ने किया।

पैनल चर्चा सचिव कर्मा चोयिंग द्वारा दी गई एक परिचयात्मक टिप्पणी के साथ शुरू हुई। इसमें उन्होंने ११वें पंचेन लामा के बारे में संक्षिप्त विवरण दिया और पंचेन लामा गेधुन चोएक्यी न्यिमा की रिहाई को सुनिश्चित करने के लिए केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के प्रयासों का संक्षिप्त विवरण दिया। उन्होंने कहा कि ११वें पंचेन लामा गेधुन चोएक्यी न्यिमा को परम पावन दलाई लामा द्वारा १०वें पंचेन लामा के पुनर्जन्म के रूप में मान्यता दी गई थी। तीन दिन बाद, गेधुन चोएक्यी न्यिमा का चीनी सरकार द्वारा अपहरण कर लिया गया था और आज तक उन्हें और उनके परिवार को अज्ञातवास हिरासत में रखा गया है। यह न केवल अंतरराष्ट्रीय मानदंडों और मानकों का उल्लंघन है बल्कि चीन के अपने कानूनों और विनियमों का भी उल्लंघन है। हालांकि, संयुक्त राष्ट्र और अन्य अधिकार समूहों द्वारा बार-बार आह्वान के बावजूद, चीन ने पंचेन लामा गेधुन चोएक्यी न्यिमा और उनके परिवार की कुशलता या ठिकाने के बारे में पूछे गए प्रश्नों का पर्याप्त या संतोषजनक जवाब देने से लगातार इनकार किया है।

उन्होंने कहा कि पंचेन लामा का मामला अभी भी है और संयुक्त राष्ट्र के अनसुलझे मामलों में से एक है।

आईसीटी-जर्मनी के कार्यकारी निदेशक काई मुलर ने अपने संबोधन में ११वें पंचेन लामा गेधुन चोएक्यी न्यिमा के लापता होने के मामले पर कानूनी परिप्रेक्ष्य में बात की। उन्होंने कहा कि, 'तिब्बत के पंचेन लामा गेधुन चोएक्यी न्यिमा मई १९९६ में गायब हो गए और तब से कभी नहीं देखे गए। वह २६ साल पहले की बात है जो बहुत लंबा समय हो गया है।'

उन्होंने कहा कि जबरन गायब कर दिए गए सभी व्यक्तियों की सुरक्षा को लेकर १९९२ की घोषणा के अनुच्छेद-१७ में जो कहा गया है, उसे मैं उद्धृत करता हूं, 'जब तक जबरन गायब कर दिए व्यक्ति की कुशलता और ठिकाने के बारे में जानकारियों को जबरन अपहरण करनेवाला छुपाकर रखता है और गायब व्यक्ति या व्यक्तियों की सूचना और उनके बारे में तथ्य अस्पष्ट रहते हैं, तब तक वह व्यक्ति को गायब करने को गंभीर अपराध माना जाएगा। जबरन गायब होने के अपराध को सभी व्यक्तियों को जबरन गायब होने से बचाने की घोषणा में परिभाषित किया गया है, जिसे मैंने अभी उद्धृत किया है और जिसकी पुष्टि गायब कर दिए जाने के खिलाफ २००६ में आयोजित सम्मेलन में भी की गई है, इसलिए यह तब तक अपराध की श्रेणी में माना जाएगा, जब तक कि गायब व्यक्ति की कुशलता और ठिकाने के बारे में पता नहीं चल जाता है। तदनुसार, १९९५ में गेधुन चोएक्यी न्यिमा का गायब होना पीड़ित और गायब करनेवालों का अपराध है।'

उन्होंने स्पष्ट किया कि, 'एक ओर यहां, पीड़ित गेधुन चोएक्यी न्यिमा और उनका परिवार हैं और अपराधी वे हैं जिन्होंने उस समय गायब करने का आदेश दिया और उसे अंजाम दिया। आज जो गेधुन चोकेयी न्यिमा के ठिकाने को छिपाने में साथ देते आए हैं और आज भी साथ दे रहे हैं या उनके ठिकाने को गुप्त रख रहे हैं, वे भी उस अपराध में सहभागी हैं। ये अपराधी वही चीनी अधिकारी हैं जो उस समय गायब करने में थे और समय के साथ जो आज उनके प्रतिनिधि के तौर पर अधिकारी के पद पर आसीन हैं। यह तथ्य अंतरराष्ट्रीय समुदाय के सामने यह तथ्य बहुत स्पष्ट होना चाहिए।'

काई मुलर ने चीनी सरकार से गेधुन चोएक्यी न्यिमा की रिहाई की मांग के लिए अंतरराष्ट्रीय अधिकार समूहों द्वारा पारित विभिन्न घोषणाओं और प्रस्तावों को भी उद्धृत किया। उन्होंने समझाया कि पंचेन लामा का गायब होना अधिकारों के उल्लंघन का एक व्यक्तिगत मामला नहीं है, बल्कि तिब्बती लोगों के सांस्कृतिक अधिकारों के रूप में सामूहिक अधिकारों का उल्लंघन भी है। उन्होंने रेखांकित किया कि धर्म तिब्बती संस्कृति का एक अभिन्न अंग है और अधिकार के रूप में धार्मिक भिक्षुओं की नियुक्ति धर्म और विश्वास की स्वतंत्रता का एक मान्यता प्राप्त सिद्धांत है। यह सिद्धांत किसी धर्म समूह द्वारा अपनी धार्मिक संस्था और अंततः किसी की संस्कृति को आत्मनिर्णय करने के लिए है।

पैनल के अगले वक्ता बाइलाकुप्पे स्थित ताशी ल्हुनपो मठ के महंत ज़ीक्याब रिनपोछे थे। तिब्बत में ताशी ल्हुनपो मठ पंचेन लामा परंपरा की पारंपरिक पीठ है। ज़ीक्याब रिनपोछे ने समझाया कि पंचेन लामा परंपरा का महत्व न केवल तिब्बत और हिमालय में स्थित बौद्ध समुदायों के लिए है, बल्कि पूरी दुनिया के लिए भी है। उन्होंने दलाई लामा द्वारा पंचेन लामा के चयन की परंपरा और दलाई लामा के चयन में निभाई गई पंचेन लामा की भूमिका की ऐतिहासिक परंपरा के बारे में भी बताया। दोनों धार्मिक हस्तियां सदियों से एक-दूसरे के गुरु और शिष्य के रूप में रही हैं और पंचेन लामा दलाई लामाओं की सेवा में हमेशा उनके साथ रहे हैं। इस ऐतिहासिक संबंध ने एक-दूसरे के पुनर्जन्म को पहचानने की ऐतिहासिक भूमिका को जन्म दिया है जिसके कारण तिब्बती लोककथाओं में लोकप्रिय कविता 'आकाश में सूर्य-चंद्रमा तथा धरती पर दलाई लामा-पंचेन लामा' लोकप्रिय हुई।

रिनपोछे ने इतिहास के माध्यम से पंचेन लामा परंपरा पर संक्षिप्त पृष्ठभूमि बताई, जो अमिताभ बुद्ध की सांसारिक अभिव्यक्ति हैं। उन्होंने विशेष रूप से १०वें पंचेन लामा गेधुन चोएक्यी ग्यालत्सेन के प्रयासों और योगदान पर जोर दिया, जैसा कि चीनी सरकार को उनकी १४,००० शब्दों वाले दस्तावेज में उदाहरण दिया गया है। इसके लिए चीनी सरकार द्वारा उनकी गंभीर आलोचना की गई थी, उन्हें कैद किया गया और दंडित किया गया था।

रिनपोछे ने ११वें पंचेन लामा के गायब होने को तिब्बती इतिहास के सबसे काले समयों में से एक बताते हुए रिनपोछे ने पंचेन लामा की रिहाई के लिए तिब्बत में ताशी ल्हुनपो मठ के भिक्षुओं के निरंतर प्रयासों और गतिविधियों के बारे में बताया। इस कारण से चीनी अधिकारियों ने उन भिक्षुओं को निष्कासित किया, गिरफ्तार किया और दंडित भी किया।
उन्होंने आगे सामान्य रूप से तिब्बती लोगों और विशेष रूप से पंचेन लामा के भक्तों की गहरी पीड़ा व्यक्त की और संयुक्त राष्ट्र और वैश्विक नेताओं से चीन से पंचेन लामा को जबरन गायब होने से मुक्त करने का आग्रह करने की अपील की।
केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के सिक्योंग पेनपा त्सेरिंग ने अपने मुख्य भाषण में अगले दलाई लामा के चयन के संदर्भ में चीनी सरकार द्वारा पंचेन लामा के अपहरण के ऐतिहासिक महत्व के बारे में बताया।
उन्होंने कहा, 'सवाल उठता है कि चीन सरकार ने छह साल के बच्चे का अपहरण क्यों किया?कैसे एक छह साल का बच्चा चीन सरकार के लिए खतरा बन गया?चीन ने परम पावन दलाई लामा द्वारा मान्यता प्राप्त वास्तविक पंचेन लामा के स्थान पर दूसरे छह वर्षीय बच्चे को पंचेन लामा के पद पर क्यों स्थापित किया। क्या पूरी प्रक्रिया एक उच्च लामा के चयन की उचित रस्मों से गुजरी?' उन्होंने कहा कि आने वाले वर्षों में इन सवालों के बहुत सारे परिणाम होंगे।

उन्होंने स्पष्ट किया, 'चीनी सरकार द्वारा ११वें पंचेन लामा का अपहरण करने का असली कारण यह सुनिश्चित करना है कि वे अगले दलाई लामा का चयन करने में शामिल होंगे। यह उन कई मुद्दों में से एक है जिसे कई वर्षों से उठाया गया है कि वर्तमान दलाई लामा की उम्र बढ़ रही है। अमेरिका में प्रत्येक सरकार ने ऐसे प्रस्ताव पारित किए हैं जो १५वें दलाई लामा की मान्यता के महत्व पर बल देते हैं। उन्होंने समझाया कि अगले दलाई लामा के चयन के मुद्दे पर पंचेन लामा की बड़ी प्रासंगिकता है।'

सिक्योंग ने पिछले पंचेन लामा के योगदान के बारे में भी बात की, विशेष रूप से तिब्बती भाषा को पुनर्जीवित करने के उनके प्रयासों और १९८९ में उनकी रहस्यमय मौत पर छाए संदेह के बादल को लेकर उन्होंने बात कीं। उन्होंने चीनी सरकार द्वारा चली गई इस चाल पर विस्तार से बताया कि किस तरह से चीन ने पंचेन रिनपोछे की दिखावटी चयन प्रक्रिया के दौरान यह सुनिश्चित कर लिया कि उसके चहेते उम्मीदवार का ही चयन हो जाए। कुंबुम मठ के महंत अर्जिया रिनपोछे, जो बाद में निर्वासन में भाग गए थे, ने चयन प्रक्रिया के बारे में एक किताब लिखी है। उन्होंने समझाया है कि

चीनी अधिकारियों ने अपने उम्मीदवार के नाम के नीचे कुछ संकेतक बना दिया था, ताकि उसके उम्मीदवार का नाम अलग तरह का रहे और आसानी से पहचाना जा सके। सिक्योंग ने कहा, यह सब चाल इसलिए चली गई थी कि परम पावन दलाई लामा द्वारा चिह्नित किए गए असली पंचेन लामा का चयन नहीं हो पाए।

सिक्योंग ने स्वर्ण कलश समारोह की वैधता पर भी सवाल उठाया। उन्होंने समझाया कि चीनी सरकार द्वारा अपने उम्मीदवार का चयन कराने का एकमात्र कारण यह सुनिश्चित करना है कि वह समय आने पर चीन की पसंद के अगले दलाई लामा का चयन करने में मदद कर सकें।

असली पंचेन लामा के ठिकाने पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि हमें नहीं पता कि वह कहां हैं। हम यह भी नहीं जानते कि वह जीवित है या नहीं। उन्होंने कहा, 'यहां तक कि अगर वह जीवित है, तो उन्हें उस तरह की शिक्षा प्रदान नहीं की गई होगी, जो एक पंचेन लामा को मिलनी चाहिए, जिससे वास्तविक पंचेन लामा पूरी तरह से संवेदनशील प्राणियों की सेवा करने के लिए कर्तव्यों का पालन करने में सक्षम हो जाते हैं।'

सिक्योंग ने विस्तार से बताया कि, 'अगर कल अंतरराष्ट्रीय समुदाय के दबाव के कारण भले ही चीनी सरकार यह कहती है कि पंचेन लामा यहां हैं, लेकिन वह पंचेन लामा अपने धार्मिक कर्तव्यों का पालन करने में अक्षम होंगे, क्योंकि उन्हें उस तरह से शिक्षित नहीं किया गया है। इसलिए, लामाओं के पुनर्जन्म में हस्तक्षेप करना चीनी सरकार का राजनीतिक निर्णय है। यही मुख्य कारण है कि उन्होंने आदेश संख्या-५ पारित किया है जो लामाओं के पुनर्जन्म के चयन के संबंध में है।'

उन्होंने अपनी भावना व्यक्त करते हुए कहा, 'एक नास्तिक सरकार जो धर्म में विश्वास नहीं करती है, जिसे मृत्यु के बाद जीवन के बारे में कोई जानकारी नहीं है, उसे पुनर्जन्म प्रक्रिया में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। क्योंकि पुनर्जन्म की प्रक्रिया में विश्वास करने के लिए व्यक्ति को मृत्यु के बाद के जीवन के दर्शन में विश्वास करना पड़ता है।'

उन्होंने कहा, अंतरराष्ट्रीय समुदाय की प्रतिक्रिया यह जानने के लिए भी पर्याप्त नहीं थी कि पंचेन लामा कहां हैं। यहां तक कि यह पता लगाने के लिए कि वह जीवित है या नहीं, विश्व समुदाय कोई रुचि नहीं दिखा रहा है।'

• वांग जुन्झेंग: क्या बीजिंग 'टीएआर' को और अधिक सुरक्षित बनाने का इरादा रखता है?

tibetpolicy.net, २६ अक्तूबर २०२१

चीनी सरकारी समाचार एजेंसी 'शिन्हुआ' ने राष्ट्रव्यापी नेतृत्व फेरबदल के बीच 'तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र (टीएआर)' के पार्टी सचिव के रूप में वांग जुन्झेंग और छह अन्य पार्टी सचिवों की नियुक्ति की घोषणा की। यह तर्क दिया जा सकता है कि टीएआर के पूर्व पार्टी सचिव वू यिंगजी (बी.१९५६) को बदलने का निर्णय संभवतः प्रांतीय स्तर के नेतृत्व के लिए ६५ वर्ष की आयु की अनिवार्यता के कारण लिया गया होगा।

वू यिंगजी तिब्बत में ६० वर्षों से अधिक समय से रह रहे हैं और उनके पास टीएआर में काम करने का ४७ वर्षों का अनुभव है। इनके विपरीत वांग जुन्झेंग के पास तिब्बत का अनुभव नगण्य है। एक अनौपचारिक जीवन वृत्त के अनुसार, वांग का जन्म १७ मई १९६३ को शेडोंग प्रांत में हुआ था। उन्हें फरवरी २०१९ में जिलिन प्रांत से झिंझियांग उग्यूर स्वायत्त क्षेत्र (एक्सयूएआर) में स्थानांतरित कर दिया गया, जहां उन्होंने प्रांतीय राजधानी चांगचुन के पार्टी प्रमुख के रूप में कार्य किया। झिंझियांग में, वांग को राजनीतिक और कानूनी मामलों के आयोग (पीएलएसी) का प्रमुख नियुक्त किया गया था, शायद इस प्रमाण पर कि उन्होंने युन्नान प्रांत में अपने लंबे करियर के दौरान कुनमिंग राजनीतिक और कानूनी मामलों के विभाग के प्रमुख के रूप में कार्य किया था। पीएलएसी सीधे अदालतों, अभियोक्ता, सार्वजनिक सुरक्षा ब्यूरो और जेलों की निगरानी करता है। इस प्रकार वह बहुत जबरदस्त शक्ति का इस्तेमाल करता है।

अप्रैल २०२० में वांग जुन्झेंग को झिंझियांग प्रोडक्शन एंड कंस्ट्रक्शन कॉर्प्स (एक्सपीसीसी) का पार्टी सचिव और राजनीतिक कमिसार नियुक्त किया गया था, जिसे बिंगटुआन के रूप में भी जाना जाता है। यह राज्य के स्वामित्व वाला आर्थिक और अर्धसैनिक संगठन है। हालांकि एक्सपीसीसी को बड़े पैमाने पर सड़कों और बुनियादी ढांचे के विकास के निर्माण के द्वारा झिंझियांग के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए चित्रित किया गया है, लेकिन असलियत यह है कि यह कई नजरबंदी शिविरों को चलाने वाले एक जबरदस्त सैन्य दल के रूप में जाना जाता है, जिसके कारण वांग और चेन मिंगगुओ पर पश्चिमी देशों की सरकारों के द्वारा अभूतपूर्व समन्वित प्रतिबंध लगाए गए। मिंगगुओ झिंझियांग में उग्यूर लोगों के खिलाफ मानवाधिकारों के उल्लंघन को अंजाम देने वाले झिंझियांग पब्लिक सिक्योरिटी ब्यूरो के प्रमुख हैं।

टीएआर पार्टी सचिवों का इतिहास संक्षेप में इस प्रकार है। वांग जुन्झेंग झांग किंगली के बाद झिंझियांग से टीएआर पार्टी सचिव के रूप में पदोन्नत होने वाले दूसरे चीनी पार्टी कैडर हैं। मई २००६ से अगस्त २०११ तक टीएआर के पार्टी सचिव रहने से पहले झांग ने झिंजियांग सरकार के अर्धसैनिक बल एक्सपीसीसी के कमांडर, एक्सपीसीसी के पार्टी उप सचिव, एक्सयूएआर के पार्टी उप सचिव और उपाध्यक्ष जैसे प्रमुख पदों पर कार्य किया। यह बताना महत्वपूर्ण है कि ल्हासा में २००८ का विरोध जो अंततः तिब्बती पठार में फैल गया, झांग के टीएआर पार्टी सचिव के कार्यकाल के दौरान हुआ। झांग व्यापक रूप से दलाई लामा को 'भिक्षु के वेश में भेड़िया' जैसे संबोधन से नवाजने वाले और उनकी निंदात्मक भर्त्सना करने के लिए जाने जाते है।

इन दो स्वायत्त क्षेत्रों के शीर्ष नेतृत्व के समानांतर हस्तांतरण के आधार पर दूरदर्शिता दिखाते हुए हम तर्क दे सकते हैं कि हाल के दशक में एक्सयूएआर और टीएआर में किसी प्रकार की सुसंगत नीति का कार्यान्वयन हुआ है। उदाहरण के लिए, वांग जुन्झेंग ने झिंझियांग में चेन क्वांगुओ के नेतृत्व में सेवा की थी। चेन को बदले में टीएआर में छह साल की सेवा के बाद झिंझियांग में कट्टरपंथी झांग किंगली की जगह स्थानांतरित कर दिया गया था, जो एक्सयूएआर में पूर्व पार्टी उप सचिव थे।

१९अक्तूबर, २०२१ की सुबह नेतृत्व की बैठक बुलाई गई, जिसमें टीएआर पार्टी और सरकारी विभागों के शीर्ष अधिकारियों ने भाग लिया, जिसमें टीएआर पार्टी कमेटी के उप सचिव और टीएआर पीपुल्स पॉलिटिकल

कंसल्टेटिव कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष, फाकपा-ल्हा गेलेग नामग्याल शामिल थे। बैठक में, केंद्रीय संगठन विभाग के उप मंत्री ज़ेंग यिचुन ने औपचारिक रुप से वू यिंगजी की जगह वांग जुन्झेंग को नए टीएआर पार्टी सचिव के रुप में नियुक्त करने के चीनी कम्युनिस्ट पार्टी केंद्रीय समिति के निर्णय की घोषणा की। वू को १३वीं नेशनल पीपुल्स कांग्रेस (एनपीसी) के शिक्षा, विज्ञान, संस्कृति और सार्वजनिक स्वास्थ्य समिति के उपाध्यक्ष के रुप में नियुक्त करके एक आकर्षक सेवानिवृत्ति दी गई थी।

उसी बैठक में नए पार्टी सचिव वांग ने राष्ट्रपति शी जिनपिंग के हालिया टीएआर दौरे, पांचवें केंद्रीय नस्लीय मामलों के सम्मेलन और सातवें तिब्बत कार्य मंच के दौरान दिए गए भाषणों के महत्व पर जोर दिया। ये सभी भाषण टिकाऊ रखरखाव, आर्थिक विकास, पारिस्थितिक संरक्षण और सीमा सुरक्षा जैसे चार प्रमुख मुद्दों पर केंद्रित थे। ये चार प्रमुख मुद्दे तिब्बत का चीनीकरण और 'नस्लीय' एकीकरण को ध्यान में रखते हुए नए युग में तिब्बत पर शासन करने के लिए मार्गदर्शक सिद्धांतों का प्रतिपादन करनेवाले हैं।

नए पार्टी प्रमुख के रुप में नियुक्ति के एक दिन बाद वांग जुन्झेंग ने २० अक्तूबर, २०२१ को बीजिंग में विदेश मंत्रालय द्वारा आयोजित एक विशेष कार्यक्रम में भाग लिया। इस कार्यक्रम का विषय था, 'चीन नई यात्रा पर : एक खुश नए तिब्बत के लिए विकास का एक नया अध्याय (चाइना ऑन ए न्यू जर्नी : अ न्यू चैप्टर ऑफ डेवलपमेंट फॉर ए हैप्पी न्यू तिब्बत)'। इस कार्यक्रम में विदेशी राजनयिकों और चीन स्थित अंतरराष्ट्रीय संगठनों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया, जहां वांग ने पिछले ७० वर्षों में बुनियादी ढांचे के विकास, गरीबी उन्मूलन, शिक्षा में अनुकूल नीतियों, कानून के अनुसार धार्मिक विश्वास की स्वतंत्रता और कौशल प्रशिक्षण और रोजगार के मामले में तिब्बत में चीन की उपलब्धियों के बारे में बहुत कुछ बताया। वांग के साथ टीएआर सरकार में हाल ही में पदोन्नत कार्यवाहक अध्यक्ष यान जिनहाई (तिब्बती) भी थे। अगले दिन वांग को ल्हासा में कुछ सेवानिवृत्त वरिष्ठ तिब्बती पार्टी कैडर से मिलते हुए देखा गया, जिसमें रागदी भी शामिल थे, जिन्हें क्षेत्रीय दल की राजनीति में प्रभावशाली माना जाता था।

टीएआर नेतृत्व में दूसरा महत्वपूर्ण बदलाव चेन योंगकी (बी.१९६७) की टीएआर पार्टी कमेटी के उप सचिव के रुप में नियुक्ति के रुप में हुई है जो अक्तूबर २०२१ की शुरुआत में चे दल्हा (बी.१९५८) के बीजिंग में स्थानांतरण के बाद हुआ था। चेन टीएआर पार्टी समिति की स्थायी समिति के सदस्य थे और उनकी प्रोन्नति से टीएआर पार्टी समिति के पार्टी उप सचिवों के स्तर पर 'नस्लीय' संरचना में बदलाव आ जाएगा। पिछली संरचना में, पार्टी के चार उप सचिवों में से तीन तिब्बती थे। अब चे के स्थानांतरण और उसके बाद चेन की नियुक्ति के साथ तिब्बतियों की संख्या घटकर दो रह गई है। चे दल्हा को १३वीं एनपीसी की नस्लीय मामलों की समिति के उपाध्यक्षों में से एक के रुप में नियुक्त किया गया है। यह पद कभी बाबा फुंतसोक वांग्याल के पास था। सितंबर १९५४ में इसकी स्थापना के बाद से दो तिब्बती इस समिति के अध्यक्ष बन गए हैं। न्गाबो न्गवांग जिग्मे पांचवीं से सातवीं एनपीसी तक लगातार तीन कार्यकालों के लिए और टीएआर के पूर्व गवर्नर और १०वीं एनपीसी के पूर्व नागरिक मामलों के मंत्री दोरजे त्सेरिंग अध्यक्ष के पद पर आसीन रहे।
उसी समय टीएआर पार्टी समिति की स्थायी समिति के एक पूर्व सदस्य हे वेन्हाओ (बी.१९६४) को गुआंग्शी ज़ुआंग स्वायत्त क्षेत्र (जीजेडएआर) की स्थायी समिति का सदस्य नियुक्त किया गया है। महत्वपूर्ण सवाल यह है कि उनके द्वारा खाली छोड़े गए इस महत्वपूर्ण पद पर कौन आएगा। इस बीच, जुलाई २०२० में गवर्नर के रुप में लियाओनिंग प्रांत में स्थानांतरित होने से पहले किंघई प्रांतीय पार्टी समिति के उप पार्टी सचिव और किंघई प्रांतीय सरकार के गवर्नर लियू निंग को जीजेडएआर का पार्टी सचिव नियुक्त किया गया है। यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि क्रमशः टीएआर और किंघई में काम करते हुए हे और लियू दोनों की पीएलएसी से जुड़ाव रहा है।

चीन के विद्वान और इतिहासकार झांग लिफ़ान कहते हैं, 'झिंझियांग से अतीत में वांग के जुड़ाव का मतलब अलग मतलब हो सकता है। तिब्बत की राजधानी ल्हासा में उनका यह स्थानांतरण तिब्बती लोगों के खिलाफ सख्त नीतियों को जारी रखने के लिए चीनी अधिकारियों के दृढ़ संकल्प को इंगित करता है।' लेकिन यह देखा जाना बाकी है कि मजबूत सुरक्षा पृष्ठभूमि वाले नए पार्टी प्रमुख की नियुक्ति के साथ बीजिंग के पास टीएआर के लिए और क्या है। दूसरी बात यह है कि ये सभी प्रमुख नियुक्तियां २०२२ में २०वीं पार्टी कांग्रेस से पहले शी जिनपिंग की क्षेत्रीय शक्तियों के एकीकरण करने की नीति का संकेत देती हैं।

**श्री तेनज़िन त्सेतेन तिब्बत नीति संस्थान में रिसर्च फेलो हैं। यहां व्यक्त किए गए उनके विचार जरूरी नहीं कि तिब्बत नीति संस्थान के विचारों को प्रतिबिंबित करते हों।*

• चीन को 'दुनिया का दिल' मिटाने से रोकें

१२ अक्तूबर २०२१, deccanchronicle.com, क्लाउडे अर्पि

क्या आपने 'पेमाको की गुप्त भूमि' के बारे में सुना है?

यह वह क्षेत्र है जहां चीन अपनी आगामी १४वीं पंचवर्षीय योजना के दौरान यारलुंग त्सांगपो (ब्रह्मपुत्र) के ग्रेट बेंड में मेगा हाइड्रोपावर स्टेशन बनाने की योजना बना रहा है।

यह परियोजना थ्री गोरजेस बांध के आकार का तीन गुना होगी, जो भारत जैसे निचले इलाके के देशों के लिए बेहद खतरनाक है। इस बांध का एक और आयाम है- दुनिया के सबसे पवित्र स्थानों में से एक पेमाको लुप्त हो जाएगा।

दुर्भाग्य से हम बीजिंग में नास्तिक शासन से 'पवित्र' शब्द का अर्थ समझने की उम्मीद नहीं कर सकते।

शी जिनपिंग के सिद्धांत में 'राष्ट्र पर शासन करने के लिए, सीमाओं पर शासन करो; सीमाओं पर शासन करने के लिए सीमावर्ती क्षेत्रों के विकास को मजबूत करो' है। चीन ने भारतीय सीमा के पार तिब्बत में ६०० 'मॉडल' गांवों का निर्माण करके नए महान हेल्समैन के नारे को एक ठोस आकार दिया है। इनमें से कुछ गांव इस पवित्र क्षेत्र में पड़ जाते हैं।

जल विद्युत संयंत्र हों या नए गांवों का निर्माण, इन क्षेत्रों की पवित्रता और प्राचीन शुद्धता हमेशा के लिए खत्म हो रही है।

एक बौद्ध विद्वान और 'द हार्ट ऑफ द वर्ल्ड: ए जर्नी टू द लास्ट सीक्रेट प्लेस' के लेखक इयान बेकर ने 'सभी गुप्त भूमि के राजा' गुरु पसंभव के आठवीं शताब्दी में पेमाको की यात्रा के बारे बड़े पैमाने पर लिखा है।

बेकर ने समझाया, 'हिमालयी रेंज का सुदूर पूर्वी छोर (पेमाको) है, जहां (यारलुंग त्संगपो) यानि ब्रह्मपुत्र नद हिमालय पर्वतमाला के बिल्कुल टर्मिनस पर नमचा बरवा की चोटी की चारों ओर से परिक्रमा करते हुए एक हेयरपिन मोड़ बनाता है ... सिर्फ पेमाको की महान और आनंदमय भूमि के बारे में सुनते हुए ... जो आत्मज्ञान का मार्ग है।'

बेकर ने कई बार पेमाको का दौरा किया: 'मैंने पेमाको में बाहरी और आंतरिक मंडलियों के अनुक्रम का पालन करने की कोशिश की, जिससे परिक्रमा के केंद्र में एक तरह का स्वर्गिक चक्कर हो गया।'

वह पौराणिक स्थान जल्द ही चीनी इंजीनियरों द्वारा नष्ट कर दिया जाएगा।

बेकर लिखते हैं: 'शंभाला को मंडल के प्रतिनिधि के तौर पर माना जाता है। अगर कोई मंडल में प्रवेश कर रहा है तो इसमें परिधि की ओर से प्रवेश करने के अनेक रास्ते हैं। ... जैसे ही कोई मंडल में प्रवेश करता है, वह रूपांतरित हो जाता है। इस तरह यह एक रूपांतरित स्थान की स्थिति भी है। पेमाको में लोग एक विशेष तांत्रिक बौद्ध देवी दोरजी फागमो के शरीर होने के बारे में कहते हैं, जिन्हें संस्कृत में वज्रवरही कहा जाता है।'

सुरंग खोदने वाली मशीनों के आने के बाद धरती के इस स्वर्ग का क्या होगा? चीनी प्रचार तंत्र फिर भी 'पारिस्थितिकी के संरक्षण और जीवन यापन (प्रदान करने), स्वास्थ्य, आकर्षण और खुशी' के द्वारा एक सुंदर जगह बनाने की बात करता है। क्या यह थ्री गोरजेस डैम के आकार के तीन गुना पनबिजली संयंत्र के अनुकूल है? देवी कहां शरण लेंगी?इसके अलावा, क्या वह इन 'मानव निर्मित' योजना के लिए सहमत होंगी?

एक और मजाक: दक्षिणी तिब्बत के एक दूरदराज के गांव की एक अज्ञात तिब्बती महिला ड्रोलकर अचानक चीन में प्रमुखता में आ गईं, जब इस साल चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के १०० वर्ष पूरे होने के अवसर पर उन्हें राष्ट्रपति शी जिनपिंग द्वारा सबसे प्रतिष्ठित सम्मान '०१ जुलाई मेडल' से सम्मानित किया गया। लेकिन क्यों?

अक्तूबर २०१७ में श्री शी ने दो युवा महिला तिब्बती चरवाहों- ड्रोलकर और उनकी बहन को एक पत्र भेजा था, जिन्होंने उन्हें भारतीय सीमा के उत्तर में अपने गांव, युम का परिचय दिया था।

राष्ट्रपति शी ने सीमा क्षेत्र में उनके द्वारा की गई वफादारी और योगदान के लिए उन्हें धन्यवाद दिया। क्षेत्र में शांति के बिना लाखों परिवारों के लिए शांतिपूर्ण जीवन नहीं होगा।'

लड़कियों का गांव युम मैकमोहन रेखा के उत्तर में कुछ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, जो सुदूर भारतीय गांव तक्षिंग से दूर नहीं है। यह गांव अचानक आगे स्थापित होनेवाले ६०० गांवों के लिए एक आदर्श गांव बन गया।

युम तिब्बत में सबसे पवित्र स्थानों में से एक था और पवित्र त्सारी तीर्थयात्रा के लिए आखिरी पड़ाव था। चीनी वेबसाइट 'चाइना तिब्बत ऑनलाइन' ने इस क्षेत्र की प्रशंसा करते हुए लिखा है, 'तिब्बत के शंभाला के रूप में प्रसिद्ध, त्सारी टाउनशिप अपनी हरी-भरी वनस्पति, मिले जुले मौसम, शांत झील, बहते हुए ब्रुक, विशाल जंगल, पवित्र पहाड़ों के साथ-साथ विभिन्न प्रकार की जड़ी-बूटियों के लिए जानी जाती है।

अभी भी कैलाश यात्रा के साथ तिब्बत में सबसे पवित्र तीर्थस्थलों में से एक त्सारी संयोग से अगस्त १९५९ में लोंगजू में चीनी और भारतीय सैनिकों के बीच पहली झड़प का स्थल बन गया था।

इस तीर्थयात्रा की अनूठी विशेषताओं में से एक यह थी कि यह भारत-तिब्बत सीमा (मैकमोहन रेखा) के ठीक पार चलती थी। इसका आधा हिस्सा तिब्बत में है, जबकि दूसरा आधा हिस्सा भारत के उत्तर-पूर्व सीमांत एजेंसी (नेफा या अरुणाचल प्रदेश) में।

युम ने यात्रा में एक महत्वपूर्ण आध्यात्मिक भूमिका निभाई। 'द कल्ट ऑफ प्योर क्रिस्टल माउंटेन: पॉपुलर पिलग्रिमेज एंड विजनरी लैंडस्केप इन साउथ-ईस्ट तिब्बत' के लेखक टोनी ह्यूबर ने लिखा, 'तीसरे तिब्बती महीने के दूसरे सप्ताह के दौरान, 'माउंटेन ओपनिंग' के लिए प्रारंभिक अनुष्ठान युम गांव में शुरू हुआ, जो त्सारी के पश्चिम में अवस्थित है।

उस समय पर्वत के रक्षक देवताओं की पूजा की जाती थी। सालाना समारोह और त्योहार के इस सप्ताह भर की अवधि को छोले चेन्मो या 'द ग्रेट रिलिजियस वर्क' कहा जाता है और यह मुख्य रूप से स्थानीय ग्रामीणों द्वारा किया जाने वाला एक अनुष्ठान था। आज ग्रामीण चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के लाल झंडे की पूजा करते हैं और गांव के चारों ओर की चट्टानों को लाल रंग में रंग देते हैं।
ह्यूबर ने एक जानकार स्थानीय व्यक्ति के बारे में बातें की, जिन्होंने दो वंशानुगत लामाओं के काल में पहाड़ को खोलने की भूमिका निभाई थी... जैसा कि उनके नाम से पता चलता है। वे रास्ते को साफ करने के लिए और पहाड़ पर गहरे झरने वाले हिमपात और तीर्थयात्रियों पर गिरने की आशंका वाले हिमस्खलन को रोकने के लिए अनुष्ठान सूत्रों के माध्यम से उत्पन्न कुछ जादुई शक्तियों का उपयोग करते थे।' ये ड्रोलकर के पूर्वज थे।

युम और त्सारी घाटी के निवासी यात्रा की परंपरा के 'सेवक' या 'चौकीदार' थे। 'पहाड़ के देवी-देवताओं के लिए गांवों में होनेवाली पूजा उत्सवों के आयोजन में उनकी सक्रिय भूमिका थी'। ह्यूबर के अनुसार, युम त्सारी में तांत्रिक रिट्रीट के विकास का मूल केंद्र था ... ऐसा कहा जाता है कि छोले चेन्मो का मूल अर्थ युम क्षेत्र में योगियों

द्वारा शीतकालीन ध्यान के अंत को चिह्नित करना और तांत्रिक आकाश की पूजा करना था।'

यह सब १९५१ में तिब्बत पर आक्रमण और चीनी कब्जे के साथ समाप्त हो गया।

जबकि अधिनायकवादी चीन ने पवित्र परंपरा को लगभग पूरी तरह से मिटा दिया है, यह निश्चित रूप से कुछ ऐसा है जिसे लोकतांत्रिक भारत बढ़ावा दे सकता है। नई दिल्ली को तिब्बत (लद्दाख, उत्तराखंड, हिमाचल, सिक्किम या अरुणाचल प्रदेश में) की सीमाओं के पास सभी पवित्र स्थानों को विकसित करना चाहिए, विशेष रूप से उन सभी स्थानों को जिन्हें पसंभव, गुरु नानक, लामाओं या स्थानीय संतों का आशीर्वाद प्राप्त है।

****

भारत तिब्बत सहयोग मंच के क्षेत्रीय कार्यकर्ता अंबाला, छत्तीसगढ़, चित्तौड़, अवध और चंडीगढ़ मे २० अक्टूबर १९६२ की चीनी आक्रमण के खिलाफ अपनी विरोद प्रदशन करते हुए

IMPORTANT NOTICE

Dear Readers,

Firstly, I would like to express my heartfelt appreciation for the overwhelming response and support that we have received from you since the launch of Tibbat Desh Magazine.
Tibbat Desh Magazine is the only monthly Hindi Magazine on current affairs of Tibet which includes news on teachings of His Holiness the Dalai Lama, Current grave situations inside Tibet, Events & activities in Exile and of the Tibetan Freedom movement across the globe.
You must be aware, for the past 2 years, we have been receiving complaints about delay and not obtaining the Tibbat Desh magazine on time to our readers. And also we found that many of our readers either have shifted or changed their existing postal address. Therefore to review the mailing address, we request you to assist us in providing the current postal address at the below mentioned address or email.
We would also request our readers to send their feedbacks and suggestions about the magazine.

Yours Sincerely,

Jigmey Tsultrim
Coordinator
India Tibet Coordination Office

आवश्यक सूचना

प्रिय पाठकों,

सबसे पहले में, आप सभी का बहुत अभार व्यक्त करता हूं कि जब से तिब्बत देश मासिक पत्रिका का विमोचन हुआ आप लोगों का निरंतर समर्थन एवं शानदर भागीदारी रहा है।
तिब्बत देश, तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका है, जो तिब्बत के भीतर हो रहे चीनी दमनकारी और क्रूर नीति तथा विश्व स्तर पर परमपावन दलाई लामा के मार्गदर्शन में तिब्बती आंदोलन के बारे में भारत के सरकार और लोगों में समर्थन एवं जानकारी उपलब्ध कराना है।
आप सभी को ज्ञात है कि, पिछले दो वर्षों से, हमारे पठकों का बहुत सारे शिकायतों हमारे इस कार्यलय में प्राप्त हुआ, जिनमें कई का यह कहना था कि उनको तिब्बत देश मिल नही रहा है। साथ ही हमें यह भी जानकारी मिली है कि बहुत सारे पठकों का पता एवं आवास बदल गया है या वहां से रवाना हो चुका है।
इसलिए हम इस पत्रिका का इस बार समीक्षा कर रहे है। और आप सभी से यह निवेदन करता हूं कि अगर आपको तिब्बत देश पत्रिका प्राप्त हो रहे है तो उसकी पुष्टी हमे तुरन्त देने की कष्ट करें। आप इसकी पुष्टी हमारे नीछे लिखे गये पता या ई–मेल पर भेज सकते है।
अतः तिब्बत देश पत्रिका के संदर्भ में अपना राय एवं सुझाव हमे समय समय पर भेजने की कष्ट करें।

सादर आपका

जिगमे त्सुलट्रिम
समन्वयक, भारत तिब्बत समन्वय केंद्र
नई दिल्ली

कार्यलय पताः भारत तिब्बत समन्वय केंद्र, एच–10, द्वितीय मंजील, लाजपत नगर–03, नई दिल्ली–110024
फोनः 011–29830578
ई–मेलः indiatibet7@gmail.com

October, 2021, Years: 42 Issue: 10 Regd No. : RNI 34636-79

हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल श्री राजेंद्र विश्वनाथअर्लेकर, केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के सिक्योंग पेनपा छेरिंग और विशिष्ट अतिथि (बीटीएसएम) के संस्थापक श्री इंद्रेश कुमार।

भारत तिब्बत सहयोग मंच के महिला कार्यकर्ता